सर्वहारा दृष्टिकोण

सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया (कम्युनिस्ट) का मुखपत्र (पाक्षिक)

वर्ष-26 अंक-17 7 सितम्बर से 21 सितम्बर, 2011 मुख्य संपादक - कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती मूल्य : 2 रुपये

कॉमरेड शिवदास घोष के योग्य शिष्य बनें, उच्च मूल्यबोधों के आधार पर पार्टी व क्रांतिकारी ताकतों को मजबूत करें–कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती

(बैंगलोर में आयोजित कॉमरेड शिवदास घोष की 35वीं स्मृति दिवस सभा में एस यू सी आई (सी) पोलिट ब्यूरो सदस्य कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती का भाषण)

हमारे प्रिय नेता और शिक्षक, इस युग के एक महान मार्क्सवादी चिंतनकार कॉमरेड शिवदास घोष का 35वाँ स्मृति दिवस हम मना रहे हैं। उनके संघर्ष और उनके विचारों को याद करने के लिए हर साल हम इस दिन को मनाते हैं ताकि गहरी समझ और उत्कृष्ट भावना के साथ अपने संघर्ष को आगे ले जा सकें। उनका संघर्ष महान और उच्च कोटि का संघर्ष था। ऐसा एक संघर्ष जो समाज के आमूलचूल परिवर्तन के लिए था, जो पुराने के ध्वंसावशेषों पर नई सभ्यता के निर्माण का संघर्ष था। किसी भी महान संघर्ष के लिए महान विचारों की जरूरत होती है और किसी भी समाज के संघर्षों में क्रांतिकारी आन्दोलन सर्वोच्च होता है जिसके लिए उस युग के महानतम विचारों की जरूरत होती है।

जीवन के प्रति नये दृष्टिकोण के बिना नई सभ्यता का निर्माण नहीं किया जा सकता है। जब पुराना जीवनबोध अति जराग्रस्त, प्रतिक्रियावादी हो जाता है तब यह जीवन की प्रगति में सहायता करने की बजाय जीवन में समस्याएं पैदा करने लगता है। उस जीवन को बदलना होगा। लेकिन परिवर्तन हमारे चाहने मात्र से ही नहीं होता है। इसके लिए दो अति महत्वपूर्ण चीजों की जरूरत होती है–सर्वप्रथम है एक क्रांतिकारी सिद्धांत। जब हम क्रांतिकारी राजनीति कहते हैं यह वह सब नहीं है जिसे बुर्जुआ पैटी-बुर्जुआ पार्टियां एम.एल.ए., एम.पी या मंत्री इत्यादी बनने के लिए इस्तेमाल करती हैं। क्रांतिकारी सिद्धांत जीवन के सभी पहलुओं–राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक, सांस्कृतिक, नीति-नैतिकता, सौंदर्यबोध–सभी क्षेत्रों को समेटे हुए होता है। यह जीवन और संबन्धों की नई धारणा है। मार्क्स ने बहुत ही शानदार ढंग से दिखाया था कि दूसरों के साथ मनुष्य का सम्बन्ध उत्पादन सम्बन्ध होता है। उत्पादन का मायना

केवल भौतिक उत्पादन नहीं है बल्कि वैचारिक उत्पादन भी है। इसका मायना है विचार के क्षेत्र में उत्पादन, विज्ञान, ज्ञान, दर्शन, नीति-नैतिकता, शिक्षा और संस्कृति पर विचार–समग्र रूप से जीवन की धारणा–सब को मिलाकर ही वैचारिक उत्पादन कहा जाता है। मानव सभ्यता या समाज की शुरूआत से ही, भौतिक और वैचारिक दोनों क्षेत्रों में ही मनुष्य ने उत्पादन किया है। अत: मानव ने आदिम अवस्था से विकास की मौजूदा अवस्था तक प्रगति की है और इसी प्रकार मानव उच्च उत्पादन के साथ उच्चतर अवस्थाओं में प्रगति करेगा। जब उत्पादन की शक्तियां बढ़ती हैं लेकिन उत्पादन के सम्बन्ध पुराने रह जाते हैं तो ये उत्पादन की शक्तियों और उत्पादन को बाधित करते हैं। तब पुरानी व्यवस्था उत्पादन के विकास के रास्ते में बाधा बन जाती है। अत: उत्पादन का ह्रास होता है; उत्पादन के पुराने सम्बंधों की वजह से उत्पादन में ठहराव आ जाता है जिन्हें बदलना होता है। क्रांति का ठीक यही मायना है।

जैसे ठहरा हुआ पानी दूषित हो जाता है, अनेक कीड़े, खरपतवार उसमें पैदा हो जाती है, समाज में भी ऐसा ही होता है। सांस्कृतिक अधोपतन जो आज हम देख रहे हैं, यह सर्वव्यापक भ्रष्टाचार, बढ़ते अपराध, विशेषकर महिलाओं के प्रति अपराध, ये सभी इसी वजह से बढ़ रहे हैं इतना ही नहीं कि समाज पुराना हो गया है बल्कि बहुत जराग्रस्त हो गया है। मार्क्सवाद के आधार पर लेनिन ने दिखाया था कि पिछली शताब्दी की शुरूआत में ही पूँजीवादी व्यवस्था अपनी सर्वोच्च अवस्था साम्राज्यवाद के स्तर में पहुँच गई थी यानी विकास की वह अवस्था जिसके आगे यह और विकसित नहीं हो सकती है। इस बिन्दु से इसका पतन शुरू हो गया। यह मरणासन्न हो गई है। जीवन को यह और अधिक कुछ नहीं दे सकती है, जीवन और समाज में जो कुछ भी अच्छा, महान, श्रेष्ठ, उदात्त है उसे यह सिर्फ बर्बाद कर सकती है और असल में हर श्रेष्ठ चीज को यह तबाह कर रही है। इसीलिए यह सर्वव्यापक भ्रष्टाचार, अपराधों में यह तीव्र बढ़ोतरी, पूरे के पूरे समाज का यह अध:पतन आप देख रहे हैं। सामाजिक परिवर्तन के लिए, एक आमूलचूल परिवर्तन के लिए, क्रांति के लिए समाज पुकार रहा है। सबसे पहले कॉमरेड शिवदास घोष ने हमारे देश में इस पुकार का प्रत्युत्तर दिया। उन्होंने सुना,

(शेष पृष्ठ 2 पर)

दिल्ली में बिजली दरों में की गई बेतहाशा बढ़ोतरी के खिलाफ विरोध प्रदर्शन

एसयूसीआई(सी) दिल्ली राज्य सांगठनिक कमेटी ने 29 अगस्त को दिल्ली की मुख्यमंत्री के कार्यालय के सामने बिजली दरों में वृद्धि के जनविरोधी आदेश के खिलाफ विरोध प्रदर्शन किया।

बिजली वितरण करने वाली प्राइवेट कम्पनियों की अक्षमता, कुप्रबंध और लूट को छिपाने के लिए की गई नाजायज वृद्धि के साथ सहमति जताने वाले डीईआरसी के एकतरफा आदेश पर जबरदस्त प्रतिक्रिया जाहिर करते हुए एसयूसीआई(सी) नेताओं ने कहा कि यह आवश्यक वस्तुओं की अभूतपूर्व महंगाई से त्रस्त दिल्लीवासियों पर एक और आर्थिक बोझ डाल देगा। बिजली शुल्कों में घोषित बढ़ोतरी का सभी चीजों पर प्रभाव पड़ेगा जिसे फिर उपभोक्ताओं के कंधों पर डाल दिया जाएगा जैसा कि दस्तूर है।

डीईआरसी 'उपभोक्ता हितैषी' होने का दावा करते हुए दरअसल प्राइवेट कम्पनियों के बेतुके प्रस्तावों की हाँ में हाँ मिला रहा है जिन कम्पनियों का एकमात्र उद्देश्य है निरन्तर बिजली आपूर्ति करने, फाल्टी मीटरों को बदलने, उद्योगपतियों द्वारा बिजली चोरी और भारी ट्रांसमिशन लॉस रोकने की बजाय इसकी जिम्मेदारी उपभोक्ताओं पर डालते हुए येन केन प्रकारेण अधिकतम मुनाफा कमाना है।

धरने को संबोधित करते हुए एसयूसीआई(सी) सांसद कॉ. तरुण मंडल

एसयूसीआई(सी) ने दिल्ली की मुख्यमंत्री से हस्तक्षेप करने का अनुरोध किया है ताकि यह बढ़ोतरी तुरन्त वापस ली जा सके। इस मामले पर पुनर्विचार करने और बिजली सेवाओं को प्राइवेट कम्पनियों से वापस लेने का भी आग्रह किया गया। इन कम्पनियों का खाता कैग से ऑडिट करवाने और भारत के माननीय सुप्रीम कोर्ट के आदेशानुसार बिजली शुल्क दरें घटाने की माँग की गई।

एसयूसीआई(सी) ने दिल्ली के बिजली उपभोक्ताओं से आह्वान किया कि डीईआरसी के इस नाजायज आदेश के खिलाफ खुद को संगठित करें, इसका विरोध करें और अथोरिटियों को यह बेतुकी बढ़ोतरी वापस लेने के लिए मजबूर कर दें।

कॉ. कृष्णा चक्रवर्ती का भाषण...

(पृष्ठ 1 का शेष)

सोचा और क्रिया की, यही उनका जीवन है। हमें इसे बड़ी गहराई से समझना है। उन्होंने दिखाया कि इन सब समस्याओं का कारण क्या है। मार्क्सवाद-लेनिनवाद की रोशनी में उन्होंने दिखाया कि पूँजीवाद उत्पादन के साधनों पर व्यक्तिगत मालिकाने पर आधारित है। जो अपने शुरूआती दिनों में प्रगतिशील था, यहां तक कि सामंती युग में उत्पादन के साधनों पर निरंकुश मालिकाने के खिलाफ, राजतन्त्र के घोर निरंकुश शासन के खिलाफ क्रांतिकारी था। पूँजीपति वर्ग एक नई सभ्यता लाया था, इसने भौतिक और वैचारिक दोनों उत्पादनों का द्वार खोल दिया था। इसने विज्ञान और शिक्षा को चर्च के शिकंजे से मुक्त कराया था। पुराने विचारों, आदतों, अभ्यासों, जीवन की पुरानी धारणाओं, पुरानी नीति-नैतिकता के खिलाफ पूर्ण रूप से और गैर समझौतावादी तरीके से संघर्ष किया था। जीवन की नई धारणा, व्यक्ति स्वतंत्रता की नई धारणा जो पहले नहीं थी उसे लाया था। बराबरी, स्वतंत्रता, भाईचारा जीवन का नया तरीका बन गया था। उस समय व्यक्तिगत स्वतन्त्रता एक महान चीज थी। व्यक्तिगत स्वतन्त्रता हासिल करने के लिए मनुष्य जर्जर सामंती समाज के खिलाफ लड़ा था और इस संघर्ष में कई लोगों ने अपनी जान तक कुर्बान कर दी थी।

समाज के विकास के दौरान, विज्ञान और टैक्नोलॉजी के विकास के साथ पूँजीवाद तेजी से विकसित हुआ। मार्क्स ने दिखाया कि पूँजीवादी उत्पादन के विकास की प्रक्रिया में उत्पादन की शक्तियों का चरित्र सामाजिक हो गया। बड़े-पैमाने का उत्पादन बढ़ा। लेकिन उन सामाजिक उत्पादक शक्तियों और उत्पादन पर मालिकाना व्यक्तिगत रह गया। उत्पादन के सामाजिक साधनों, सामाजिक उत्पादक शक्तियों पर यह व्यक्तिगत मालिकाना ही समाज की तमाम बुराइयों, अन्याय-अत्याचार, शोषण-उत्पीड़न का कारण है। अत: समाधान क्या है? समाधान है उत्पादन के साधनों पर, सामाजिक उत्पादक शक्तियों पर सामाजिक मालिकाना कायम करना। लेकिन मार्क्स ने साथ ही साथ दिखाया था कि एक व्यवस्था को तब तक उखाड़ फेंका नहीं जा सकता है जब तक कि वह अपने विकास के सर्वोच्च स्तर पर नहीं पहुँच जाती है जिसके आगे और विकास संभव नहीं है बल्कि पतन शुरू हो जाता है और जब तक इसके गर्भ में ही एक नई व्यवस्था विकसित और परिपक्व नहीं हो जाती है।

मार्क्स के बाद लेनिन ने दिखाया था कि जब विश्व पूँजीवाद अपनी उच्चतम अवस्था साम्राज्यवाद के स्तर पर पहुँच गया तब यह मरणासन्न, पतनोन्मुखी हो गया और यह वह स्तर है जहां से सर्वहारा क्रांति शुरू होती है। इसी वजह से लेनिन ने इस युग को केवल साम्राज्यवाद के युग के रूप में ही चित्रित नहीं किया। उन्होंने साथ ही साथ यह भी दिखाया कि यह सर्वहारा क्रांति का युग है। रूस में क्रांति करके, रूस की राजसत्ता से पूँजीपति वर्ग को उखाड़ फेंक कर लेनिन ने संदेहातीत रूप से सिद्ध कर दिया कि सर्वहारा क्रांति का युग प्रारंभ हो गया है।

हमारे देश में, कॉमरेड शिवदास घोष ने अपने सारगर्भित विश्लेषण में दिखाया कि स्वतन्त्रता के बाद यह राष्ट्रीय पूँजीपति वर्ग था जो बुर्जुआ व्यवस्था, बुर्जुआ शासन, पूँजीवाद कायम करने के लिए सत्ता में आया। साम्राज्यवाद और सर्वहारा क्रांति के इस युग में जैसा लेनिन ने दिखाया था कि अंतर्राष्ट्रीय तौर पर पूँजीपति वर्ग ने अपना तमाम प्रगतिशील चरित्र खो दिया है और प्रतिक्रियावादी बन गया है। उपनिवेशों और अर्ध उपनिवेशों में जहां राष्ट्रीय पूँजीवाद विदेशी साम्राज्यवाद और स्थानीय सामंतवाद के खिलाफ लड़ रहा था उस हद तक उपनिवेशों और अर्ध उपनिवेशों के पूँजीपतिवर्ग की कुछ सापेक्ष प्रगतिशील भूमिका थी लेकिन क्रांतिकारी भूमिका नहीं थी। इस युग में, यदि उपनिवेशों और अर्ध उपनिवेशों में पूँजीपति वर्ग स्वाधीनता आन्दोलन को नेतृत्व देता है जो ऐतिहासिक तौर पर कहें तो असल में बुर्जुआ जनवादी क्रांति है तब क्रांति को पूरी तरह सम्पन्न नहीं किया जा सकता है। इसे आधे-अधूरे तरीके से ही हासिल किया जाएगा। साम्राज्यवाद और सर्वहारा क्रांति के इस युग में बुर्जुआ जनवादी क्रांति को यदि सर्वहारा वर्ग नेतृत्व प्रदान करता है केवल तभी मजदूर वर्ग का शासन स्थापित किया जा सकता है–जैसा चीन, वियतनाम उत्तरी कोरिया में हुआ–और विकास का गैर-पूँजीवादी रास्ता अपनाते हुए अंतत: समाजवाद का निर्माण कर सकता है, समाज को मुक्त कर सकता है और भौतिक तथा वैचारिक दोनों उत्पादनों के द्वार खोल सकता है।

हमारे देश में ऐसा नहीं हुआ। कॉमरेड घोष ने गहरी व्यथा-वेदना के साथ इसे महसूस किया। अपनी किशोर अवस्था से ही वे हमारे देश के आजादी आन्दोलन में कूद पड़े थे। उन दिनों के एक क्रांतिकारी संगठन अनुशीलन समिति में वे शामिल हुए थे। जब वे मार्क्सवाद-लेनिनवाद के सम्पर्क में आए तो उन्होंने समझ लिया कि केवल यही वह दर्शन है जो सर्वहारा क्रांति ला सकता है और एक नई सभ्यता को पैदा कर सकता है। तुरंत उन्होंने मार्क्सवाद-लेनिनवाद को जीवन दर्शन के रूप में अपना लिया और मार्क्सवाद-लेनिनवाद के आधार पर सर्वहारा क्रांतिकारी आन्दोलन निर्माण करने का संघर्ष छेड़ दिया। 1940 में वे रिवोल्यूशनरी सोशलिस्ट पार्टी (आर.एस.पी) में थे। उनकी क्रांतिकारी गतिविधियों की वजह से 1942 में ब्रिटिश सरकार ने उन्हे जेल में डाल दिया। वे जेल में तीन साल तक रहे। वह द्वितीय विश्व युद्ध का दौर था। 1945 में युद्ध समाप्त होने के बाद ही उन्हें रिहा किया गया। आर.एस.पी. के अन्य कई नेताओं को भी जेल हुई थी। मार्क्सवाद-लेनिनवाद और क्रांति की सही समझदारी के लिए उन्होंने आर.एस.पी. के नेताओं के साथ गहन वाद-विवादपूर्ण संघर्ष चलाया। इस संघर्ष के दौरान उन्होंने समझ लिया कि आर.एस.पी. एक सही कम्युर्निस्ट पार्टी के रूप में विकसित नहीं हुई है। अविभाजित सीपीआई के वर्ग चरित्र का विश्लेषण करने के बाद और युद्ध के दौरान इसका आचरण देख कर, जब इसने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की पीठ में छुरा घोंपते हुए ब्रिटिश सरकार का साथ दिया था, तब वे यह निष्कर्ष पहले ही निकाल चुके थे कि यह भी एक कम्युनिस्ट पार्टी के रूप में विकसित नहीं हुई थी। तब तक वे समझ गए थे कि महत्वकांक्षी भारतीय राष्ट्रीय पूँजीपति वर्ग हमारे देश की राजसत्ता पर काबिज हो जाएगा और पूँजीवाद स्थापित करेगा। भारत अपनी बुर्जुआ जनतांत्रिक क्रांति हासिल करेगा लेकिन आधे-अधूरे रूप में हासिल करेगा और शोषित-पीड़ित जनता को मानव द्वारा मानव के शोषण से मुक्ति नहीं मिलेगी। मुक्ति को एक और संघर्ष का इंतजार था। लेकिन ऐसी कोई पार्टी नहीं थी, एक सच्ची या सही सर्वहारा की क्रांतिकारी पार्टी जिसे हम कम्युनिस्ट पार्टी कहते हैं जो उस संघर्ष को नेतृत्व दे सके। उन्होंने आर.एस.पी. को एक क्रांतिकारी पार्टी के रूप में परिवर्तित और विकसित करने का प्रयास किया लेकिन वह हो नहीं सका। 1946 में आर.एस.पी. से बाहर आने के बाद उन्होंने हमारे देश में एक सही कम्युनिस्ट पार्टी का निर्माण करने के लिए लेनिनवादी पद्धति का अनुसरण करते हुए और अंतत: कॉमरेड नीहार मुखर्जी, सचिन बैनर्जी, सुबोध बैनर्जी, हीरेन सरकार, प्रीतीश चन्दा और कुछ अन्य मुठ्ठी भर क्रांतिकारी सहयोद्धाओं को साथ लेकर कष्टसाध्य ऐतिहासिक संघर्ष छेड़ा। 1948 में उनके नेतृत्व में हमारे देश में सर्वहारा की एक सही क्रांतिकारी पार्टी की स्थापना हुई। वह है हमारी प्रिय पार्टी सोशलिस्ट यूनिटी सेंटर ऑफ इंडिया जिसे आज सोशलिस्ट यूनिटी सेंटर ऑफ इंडिया (कम्युनिस्ट) नाम से जाना जाता है।

बहुत लोग सोचते हैं कि पूँजीवाद के खिलाफ लड़ने के लिए अगर किसी पार्टी का प्रोग्राम या मूल राजनीतिक लाइन पूँजीवादी–विरोधी समाजवादी क्रांति है तो वह क्रांति कर सकती है। क्रांति करना इतना आसान नहीं है। आर.एस.पी. की लाइन भी पूँजीवाद-विरोधी समाजवादी क्रांति की लाइन है। फारवर्ड ब्लाक भी पूँजीवाद-विरोधी समाजवादी क्रांति की बात करता है। कुछ अन्य पार्टियां भी थी जो तब यही बात कहती थी। इंग्लैंड, अमेरिका, फ्रांस, जर्मनी में मार्क्सवाद-लेनिनवाद के प्रति कुछ आकर्षण रखने वाली कोई भी पार्टी जरूरी नहीं कि कम्युनिस्ट पार्टी ही हो, वस्तुत: वहां क्रांति के स्तर के बारे में उसे भ्रमित होने की कोई गुंजाइश नहीं है। उन देशों में क्रांति का स्तर पूँजीवाद-विरोधी समाजवादी क्रांति होना चाहिए यह समझना बहुत आसान है। इस बारे में कोई भ्रम नहीं है। लेकिन सिर्फ इससे ही क्रांति नहीं हो जाती है। यही वजह है कि आर.एस.पी., फॉरवर्ड ब्लाक ने पूँजीवाद-विरोधी समाजवादी क्रांति की बात कही लेकिन कभी भी एक असली क्रांतिकारी आन्दोलन, एक सही कम्युनिस्ट आन्दोलन विकसित नहीं कर सकी क्योंकि उनके पास क्रांतिकारी सिद्धांत नहीं था–यानी क्रांतिकारी जीवन और समाज की समग्र अवधारणा नहीं थी।

एक असली क्रांतिकारी आन्दोलन, एक सही जन आन्दोलन गठित करने के लिए एक महान चीज की जरूरत होती है। वह क्या है? वह है, जीवन की क्रांतिकारी धारणा, नीति-नैतिकता की धारणा, प्यार-स्नेह की धारणा और तमाम मूल्यबोध। जीवन की एक नई धारणा ऐसे ही आसमान से नहीं टपकती है; विकास की खास अवस्था में उस समाज में मौजूद उत्पादन के सम्बन्धों के आधार पर यह समाज में विकसित होती है। पूँजीवाद में उत्पादन के साधनों पर व्यक्तिगत मालिकाने के आधार पर ही पूँजीवाद विकसित हुआ है। अपनी प्रारम्भिक अवस्था में यह बहुत प्रगतिशील या क्रांतिकारी था, सामंती व्यवस्था के खिलाफ अपने विकास की अवधि तक यह ऐसा ही रहा। नीति-नैतिकता की धारणा, प्यार, स्नेह या मानवीय सम्बंधों की धारणा जो लोगों के जीवन और समाज को निर्देशित करती है वह भी व्यक्तिवाद पर आधारित थी। इस अवस्था में एक विचारधारा के रूप में व्यक्तिवाद प्रगतिशील था और सामाजिक उत्पादन को आगे बढ़ाने में, जीवन के विकास में और नई सभ्यता को विकसित होने में इसने मदद की।

लेकिन जो कुछ भी इतिहास में आता है चाहे प्रकृति में हो या समाज में उसका एक जीवन चक्र है–वह पनपता है, विकसित होता है, परिपक्व होता है और आगे बढ़ते हुए एक दिन नि:शेषित हो जाता है तब इसका पतन शुरू हो जाता है, यह मरणासन्न हो जाता है और अंतत: यह अपने खुद के गर्भ में पनपने वाले नए के लिए स्थान छोड़ते हुए एक दिन अस्तित्वहीन हो जाता है। पूँजीवाद भी एक दिन अस्तित्व में आया था और जैसा कि हमने पहले देखा अपने विकास के दौर में पिछली शताब्दी की शुरूआत में यह पतनोन्मुख और मरणासन्न हो गया। यह प्रतिक्रियावादी हो गया। ऐतिहासिक तौर से इसे चले जाना है। प्रकृति में, चीजें अस्तित्व में आती हैं और अपनी प्राकृतिक प्रक्रिया में अस्तित्वहीन हो जाती हैं। लेकिन समाज में ऐसा नहीं होता है। सामाजिक परिवर्तन के मामले में मानव चेतना की भूमिका होती है। यदि एक व्यवस्था मरणासन्न हो गई है लेकिन अस्तित्व से बाहर नहीं होती है तो यह प्रतिक्रियावादी हो जाती है। स्वभावत:, नीति-नैतिकता की धारणा, वेल्यू सिस्टम, संक्षेप में खुद जीवन की धारणा भी जो पूँजीवादी सम्बंधों या व्यक्तिवाद के आधार पर विकसित हुई थी अब पुरानी और नि:शेषित हो गई हैं। यह अब और जीवन को गाइड नहीं कर सकती है। नई नीति-नैतिकता और नये मूल्यबोध–नये जीवनबोध को विकसित करना होगा। लेकिन किसके आधार पर? उत्पादन के नए सम्बंधों के आधार पर जो पनप रहे हैं यानी अस्तित्व में आ रहे हैं। ऐतिहासिक तौर पर व्यक्तिगत मालिकाने के बाद क्या अस्तित्व में आ सकता है? ऐतिहासिक तौर पर, जब उत्पादक शक्तियां चरित्र में सामाजिक हो गई हैं तब उत्पादन के साधनों पर सामाजिक मालिकाना ही वह सम्बंध है जो ऐतिहासिक जरूरत से मेल खाता है और जिस व्यवस्था में उत्पादन के सामाजिक साधनों पर सामाजिक मालिकाना स्थापित हो गया है, वह समाजवाद की आधारशिला रखती है। उत्पादन के सामाजिक साधनों पर ऐसा एक सामूहिक मालिकाना कौन कायम कर सकता है? उत्पादन की पूँजीवादी पद्धति का विश्लेषण करते हुए मार्क्स ने शानदार ढंग से दिखाया था कि मजदूर वर्ग, सर्वहारा वर्ग सामूहिक रूप से उत्पादन करता है। अपने लिए उत्पादन नहीं करता है बल्कि समूह के लिए, समाज के लिए उत्पादन करता है। सर्वहारा वर्ग निजी सम्पत्ति से मुक्त है। अत:, वे ही उत्पादन के सामाजिक साधनों पर सामाजिक मालिकाना कायम कर सकते हैं। सामाजिक उत्पादन में

(शेष पृष्ठ 4 पर)

आजीवन क्रांतिकारी कॉमरेड हेम चक्रवर्ती लाल सलाम

वयोवृद्ध क्रांतिकारी, जननेता, समझौताहीन संग्रामी योद्धा 'कॉमरेड हेम दा' हमारे बीच नहीं रहे। विगत 24 अगस्त, सुबह 11 बजकर 15 मिनट पर एस.यू.सी.आई. (कम्युनिस्ट) पार्टी के झारखंड राज्य सचिव कॉमरेड हेम चक्रवर्ती का सेरिब्रल एटेक के कारण 94 वर्ष की आयु में देहांत हो गया। इस उम्र में भी वे न सिर्फ पार्टी गतिविधियों में सक्रिय थे, बल्कि कई जनांदोलनों में भी अहम भूमिका निभाये हैं। जिस उम्र में लोग घर से बाहर निकलने में भी सक्षम नहीं होते उस उम्र में वे विभिन्न जिलों में घूमकर पार्टी संगठन निर्माण के लिए प्रयासरत रहे। इस कार्य में उनमें कोई थकान किसी ने नहीं देखी। झारखंड के विभिन्न सुदूरवर्ती इलाके, जहां यातायात के लिए कोई साधन उपलब्ध नहीं हैं, वहां मीलों पैदल चलकर पहुंचने में उम्र कभी उनके सामने बाधा नहीं बनी। हेम दा ने अपने जीवन संग्राम से यह साबित कर दिया कि क्रांतिकारी कभी रिटायर नहीं होते। सिर्फ मृत्यु ही उनके जीवन संग्राम पर विराम लगा सकती है।

हजारों शहीदों की कुर्बानी की बदौलत जो आजादी हमें 1947 में हमें मिली, वह दरअसल अंग्रेज शोषक वर्ग के हाथों से भारतीय शोषक वर्ग के हाथों में सत्ता का हस्तांतरण था। भारत में शोषण से मुक्ति के लिए एक और क्रांति की जरूरत थी। उन्हीं दिनों जेल से छूटे एक नौजवान स्वतंत्रता सेनानी और परवर्ती समय में एक महान मार्क्सवादी चिंतनकार के रूप में प्रतिष्ठित कॉमरेड शिवदास घोष के नेतृत्व में भारत की सरजमीन पर एक सच्ची क्रांतिकारी कम्युनिस्ट पार्टी का गठन करने के लिए संग्राम शुरू हुआ और 1948 में एस.यू.सी.आई की स्थापना हुई। क्रांति की मशाल को लेकर, मार्क्सवादी विचारों से लैस होकर कुछ नौजवान क्रांतिकारी देश के विभिन्न हिस्सों में फैल गये। इनमें से ही एक थे प्रख्यात क्रांतिकारी एस.यू.सी.आई के केन्द्रीय कमिटी सदस्य व देश के अग्रणी मजदूर नेता कॉमरेड प्रीतीश चंदा। कॉमरेड प्रीतीश चंदा संगठन निर्माण के लिए धनबाद आए। यहां की कोयला खदानों के मजदूरों को उन्होंने संगठित करना शुरू किया। किशोरावस्था से ही सामाजिक गतिविधियों में सक्रिय हेम चक्रवर्ती प्रीतीश चंदा के सम्पर्क में आ गये। सन 1954 का समय था, हेम चक्रवर्ती और उनके साथियों ने मिलकर नेताजी सुभाष जयंती कार्यक्रम का आयोजन किया था, जहां वक्ता के रूप में प्रीतीश चंदा आए थे। उनके वक्तव्य से हेम चक्रवर्ती बेहद प्रभावित हुए। बाद में कॉमरेड चंदा के माध्यम से कॉमरेड शिवदास घोष के विचारों से प्रभावित हुए और इस देश में मजदूर किसानों की मुक्ति हेतु समाजवादी क्रांति को ही अपने जीवन का मूल लक्ष्य बना लिया। कॉमरेड शिवदास घोष के विचारों से लैस होकर उन्होंने धनबाद जिला में मजबूत पार्टी संगठन की नींव रखी। उन दिनों वे धनबाद के टाटा कोलियारी में अच्छे पद पर कार्यरत थे। इन कोयला खदानों में टाटा प्रबंधन के द्वारा मजदूरों का जबरदस्त शोषण चलता था। मजदूरों का असंतोष एक समय आंदोलन के रूप में फूट पड़ा। कॉमरेड हेम चक्रवर्ती नेतृत्वकारी भूमिका में थे। इस आंदोलन पर व्यापक लाठीचार्ज हुआ। कॉमरेड हेम चक्रवर्ती के साथ अन्य कई मजदूर घायल हो गये और घायल अवस्था में ही उन्हें जेल भेज दिया गया। बाद में जेल से छूटकर माफी मांग लेने की स्थिति में मजदूरों को दोबारा काम पर वापस लिया गया। परंतु कॉमरेड हेम चक्रवर्ती माफी मांगने के लिए तैयार नहीं थे। उन्हें नौकरी से निकाल दिया गया। परिवार और बाल-बच्चों के साथ अनिश्चित, असुरक्षित व अंधकारमय भविष्य की ओर हेम चक्रवर्ती चल पड़े, परंतु अपनी मर्यादा और आंदोलन के गौरव को धूमिल नहीं होने दिया। इसके बाद शुरू हुआ उनके जीवन का कठिनतम अध्याय। उच्च मध्यम वर्गीय परिवार में पले-बढ़े हेम चक्रवर्ती ने कभी गरीबी नहीं देखी थी। परंतु मार्क्सवाद-लेनिनवाद कॉमरेड शिवदास घोष के विचारों से लैस होकर उन्होंने इस असीम

यातना को हंसते हुए सहा। इसके लिए उनके मन में कोई अफसोस या ग्लानि का भाव कभी किसी ने नहीं देखा। नौकरी से निकाले जाने पर जो पैसा उन्हें मिला था उसे भी उन्होंने पार्टी के ही सुपुर्द कर दिया था। भूख, गरीबी की परवाह किये बगैर धनबाद और उसके आस-पास के इलाके की गरीब मेहनतकश जनता के लिए ही उन्होंने अपना जीवन उत्सर्ग कर दिया। इस बीच कई नौकरियों का प्रस्ताव उनके पास आया परंतु उन्होंने नौकरी नहीं की।

कई ऐतिहासिक आंदोलन उनके नेतृत्व में हुए। सन 1959 में बिहार में भयावह अकाल पड़ा। शुरू हुआ पूरे प्रांत में खाद्य आंदोलन। धनबाद में इस आंदोलन की कमान हेमदा के ही हाथों में थी। बिहार सरकार की ओर से हेम चक्रवर्ती पर डी आई आर (डिफेन्स इंडिया रूल) जैसा काला कानून थोप दिया गया, जिसके तहत उम्र कैद का भी प्रावधान था। वे भूमिगत हो गये। पुलिस लाख कोशिशों के बावजूद उन्हें ढूंढ नहीं पायी क्योंकि धनबाद के मेहनतकश जनता के हर घर में उनका आश्रय था। हर तरह के खतरे की उपेक्षा करते हुए लोगों ने, बच्चे-बूढ़े सभी के प्रिय 'हेम दा' को अपने परिवार के एक सदस्य के रूप में जगह दी। उन दिनों धनबाद की कोयला खदानों में मजदूरों पर भयावह शोषण और अत्याचार चलता था। एस.यू.सी.आई. की ओर से इसके खिलाफ संघर्ष शुरू हुआ। तैयार हुई बिहार कोलमाइनर्स यूनियन। लोगों के बीच अत्यंत लोकप्रिय हेमदा की उपस्थिति के कारण यूनियन पर हमले का साहस प्रबंधन नहीं जुटा पाता था। प्रबंधन के गुंडों और यूनियन के बीच पहाड़ के समान उनकी मौजूदगी ने यूनियन के नेताओं और कार्यकर्ताओं की रक्षा की और यह एक शक्तिशाली यूनियन के रूप में उभरी। पार्टी और यूनियन के आंदोलन से कई ऐतिहासिक जीत हासिल हुई। इसके बाद आयी 1974 की ऐतिहासिक रेल हड़ताल। हालांकि हेम चक्रवर्ती रेल कर्मचारी नहीं थे, परंतु लोगों ने उन्हें ही आंदोलन का नेता चुना। जल्द ही हेम दा गिरफ्तार कर लिये गये और लम्बे समय तक उन्हें जेल में रहना पड़ा। इसी दौरान आया जेपी आंदोलन। इस आंदोलन में भी उनकी नेतृत्वकारी भूमिका के कारण धनबाद में इस आंदोलन का जबरदस्त असर पड़ा। उनके इस संग्रामी जीवन को देखते हुए उन्हें पार्टी की बिहार राज्य कमिटी में शामिल किया गया। बिहार के अन्य जिलों में वे संगठन निर्माण के लिए गये और कई जिलों में संगठन की नींव उन्हीं के द्वारा रखी गयी। इसी संग्राम के क्रम में हेम दा न सिर्फ एक लोकप्रिय जननेता के रूप में उभरे बल्कि जीवन की कठिन परीक्षाओं में उत्तीर्ण होते हुए एक सच्चे कम्युनिस्ट के सारे गुणों को हासिल किया।

सन 1988 में एस.यू.सी.आई की पहली कांग्रेस हुई। इसी दौरान बिहार के कुछ कॉमरेडों को पार्टी की ओर से स्टाफ मेंबरशिप देने का निश्चय किया गया जो एस.यू.सी.आई. (कम्युनिस्ट) पार्टी में सर्वोच्च सदस्यता होती है, जिसे उन्हीं कॉमरेडों को दिया जाता है जिन्होंने जीवन में संघर्ष करते हुए खुद को पार्टी और क्रांति के साथ एकात्म कर दिया हो, जिनका क्रांतिकारी आंदोलन से अलग और कोई व्यक्तिगत जीवन न हो। कॉमरेड हेम दा भी इसमें शामिल थे। परंतु उन्होंने पार्टी के इस निर्णय को वापस लेने के लिए आवेदन किया। उनका कहना था कि अब भी वे परिवार में रहते हैं इसलिए स्टाफ मेंबरशिप की योग्यता उनमें नहीं है। हालांकि यह सभी लोग जानते हैं कि हेमदा ने परिवार में रहते हुए भी कभी पारिवारिक जीवन नहीं जीया, परिवार के सदस्यों को भी उन्होंने पार्टी विचारधारा से प्रभावित किया था, जिसकी वजह से हेमदा की इच्छाओं का सम्मान करते हुए उनके पुत्रों ने हेम दा के देहांत के बाद कोई श्राद्धकर्म नहीं किया।

कॉमरेड हेम चक्रवर्ती का जीवन क्रांति और पार्टी के लिए ही समर्पित था। परंतु हेम दा स्टाफ मेंबर बनने के लिए तैयार नहीं थे। यह एक असाधारण गुण था। नेता बनने की अभिलाषा, खुद को बड़ा दिखाने की इच्छा, मशहूर होने की ख्वाहिश जैसी व्यक्तिवादी सोच के कारण कई संभावनामय क्रांतिकारी व गौरवशाली आंदोलनों को सुदूर अतीत से लेकर आज तक बीच रास्ते में ही दम तोड़ते हुए हमने देखा। हेमदा इसके खिलाफ एक ज्वलंत प्रतिवाद थे। बाद में झारखंड अलग राज्य बनने के उपरांत उन्हें ही पार्टी के झारखंड प्रांतीय सचिव बनाने का निश्चय किया गया। हेमदा ने फिर से पार्टी के पास आवेदन भेजा कि उन्हें राज्य सचिव न बनाया जाए क्योंकि वे योग्य नहीं हैं। उस समय उनकी उम्र 82 साल थी। उन दिनों वे बीमार चल रहे थे। इस आवेदन के बावजूद पार्टी ने सर्वसम्मति से उन्हें ही राज्य सचिव चुना। इस उम्र में शुरू हुआ उनके जीवन का और एक संग्रामी अध्याय। वे धनबाद छोड़कर रांची चले आए। उन दिनों रांची में पार्टी का कोई कार्यालय नहीं था। एक छोटे से कमरे में अन्य कॉमरेडों के साथ कठिन जीवन की शुरूआत हुई। बाद में पार्टी सेंटर बना, जहां वे अंतिम दिनों तक रहे। पूरे झारखंड में संगठन निर्माण में उन्होंने इस उम्र में भी उल्लेखनीय भूमिका निभायी। उन्होंने न सिर्फ कई कॉमरेडों को पार्टी के साथ जोड़ा बल्कि आज पार्टी के लिए महत्वपूर्ण जिम्मेवारी उठा रहे कई कॉमरेडों के विकास में भी अहम भूमिका निभायी। हेम दा जहां जाते थे, सहज रूप से घुलमिल जाते थे। सिर्फ कॉमरेडों के साथ ही नहीं बल्कि कॉमरेडों के परिवार के अन्य सदस्यों के साथ भी हेम दा का गहरा संबंध था। परिवार के लोगों को पार्टी विचारों से प्रभावित कर कॉमरेडों के लिए मुश्किल कम कर देते थे। हेम दा का एक और गुण था जिसे आज याद करना जरूरी है। संगठन में रहते हुए असहमति के कारण कई लोगों ने विभिन्न मौकों पर उन्हें भला-बुरा कहा परंतु हेम दा ने कभी पलटकर वार नहीं किया। हेम दा अपने जीवन में बहुत ही अनुशासित और समय के पक्के पाबंद थे। वे दूसरों से भी ऐसी ही अपेक्षा रखते थे। चाहे वह एक नये कॉमरेड ही क्यों न हो वे हमेशा दूसरों को सम्मान देते थे। इसलिए वे सभी से इज्जत पाते भी थे। कॉमरेड हेम दा मार्क्सवाद-लेनिनवाद के बुनियादी सिद्धांत के सवाल पर वैचारिक संघर्ष को हमेशा प्रोत्साहित करते थे। अधिक उम्र हो जाने के कारण किताबें पढ़ने में उन्हें काफी दिक्कत होती थी। परंतु फिर भी वे रोजाना घंटों किताब पढ़ते थे। चाहे संगठन की जरूरत हो या कॉमरेडों की जरूरत हेम दा की जहां भी जरूरत महसूस की गयी, हेम दा उपस्थित रहे। क्रांति और पार्टी के अलावा उनके जीवन में और किसी भी चीज का कोई अस्तित्व नहीं रह गया था। सन 2009 में आयोजित पार्टी कांग्रेस के समय उन्हें स्टाफ मेंबरशिप दी गयी। आज जब राजनीति नीचता और भ्रष्टाचार का दूसरा नाम हो गया है, लोगों की आस्था और भरोसा राजनैतिक नेताओं पर से उठ रहा है, इस परिस्थिति में कॉमरेड हेम चक्रवर्ती का जीवन संग्राम हमारे बीच एक जीवंत प्रेरणस्रोत के रूप में मौजूद रहेगा।

कॉमरेड हेम चक्रवर्ती लाल सलाम!

अंतिम यात्रा

28 अगस्त सुबह 10 बजे कॉमरेड हेम चक्रवर्ती के पार्थिव शरीर को रांची स्थित राज्य पार्टी कार्यालय में लाया गया। हेम दा सिर्फ पार्टी कॉमरेडों से ही नहीं, उनके परिवार और आस-पड़ोस के आम लोगों से भी सहज ही घुल मिल जाते थे और अपने व्यक्तित्व से उन पर असरदार प्रभाव भी छोड़ते थे। इसलिए खबर मिलते ही सैकड़ों की तादाद में लोग अश्रुपूर्ण हृदय लेकर राज्य कार्यालय में उपस्थित हुए। यहां कॉमरेड हेम चक्रवर्ती का अंतिम श्रद्धासुमन भेंट करने के लिए उपस्थित हुए पार्टी पोलिटब्यूरो सदस्य कॉमरेड रंजीत धर, पार्टी के बिहार राज्य सचिव कॉमरेड शिवशंकर, बिहार राज्य कमिटी सदस्य कॉमरेड अरुण सिंह। उनके द्वारा माल्यार्पण के उपरांत पार्टी के झारखंड राज्य कमिटी के सदस्यगण कॉमरेड्स रबीन समाजपति, के पी सिंह, आर.एस.शर्मा, विमल दास, सिद्धेश्वर सिंह, रामलाल महतो, सीताराम टुडू, सुमित राय ने माल्यार्पण किया। विभिन्न जिला कमिटियों की ओर से भी माल्यार्पण किया गया।

इसके अलावा विभिन्न जनसंगठनों के जिला और राज्य स्तरीय नेताओं ने भी माल्यार्पण किया। विभिन्न वाम व जनवादी संगठन के नेतृत्वकारी साथियों ने माल्यार्पण किया। इसके अलावा अंतिम श्रद्धासुमन भेंट करने के लिए राज्य के प्रमुख बुद्धिजीवी रांची विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ. रमेश शरण, वैज्ञानिक डॉ. शिवनाथ मजूमदार सहित अन्य कई शिक्षाविद और बुद्धिजीवी आए थे।

दोपहर 2 बजे अंतिम यात्रा शुरू हुई। सबसे पहले हेम दा के 94 साल के संग्रामी जीवन की याद में 94 लाल झंडे लेकर कॉमसोमॉल के कॉमरेडों ने मार्च किया। अंतिम यात्रा सीटीओ स्थित श्मशान में जाकर समाप्त हुई जहां कॉमसोमॉल की ओर से गार्ड ऑफ ऑनर पेश किया गया। इसके बाद 'आजीवन क्रांतिकारी कॉमरेड हेम चक्रवर्ती लाल सलाम', 'कॉमरेड हेम चक्रवर्ती को हम नहीं भूलेंगे', 'आपका संग्रामी जीवन हमें प्रेरणा देता रहेगा' आदि गगनभेदी नारों के साथ कॉमरेडों ने अपने प्रिय नेता को अंतिम विदाई दी।

कॉ. कृष्ण चक्रवर्ती का भाषण...

(पृष्ठ 2 का शेष)

मजदूर वर्ग की इस ऐतिहासिक स्थिति से मार्क्स ने दिखाया था कि इतिहास में सर्वहारा वर्ग अति विकसित और क्रांतिकारी वर्ग है। इस सामूहिकतावाद के आधार पर मार्क्सवाद ने नीति-नैतिकता की नई धारणा, प्यार, स्नेह, मानव सम्बंधों की नई धारणा और तमाम मूल्यबोध विकसित किये जो इतिहास में अब तक पैदा हुए, तमाम मूल्यबोधों में उच्चतम और श्रेष्ठतम हैं। अनेक लोगों ने मार्क्स से पूछा था कि जो मूल्यबोध आपने पैदा किये हैं, इतने उच्च और इतने सुन्दर हैं लेकिन आप उन सब को मानवतावाद क्यों नहीं कहते हैं? आप इसे कम्युनिज्म क्यों कहते हैं? ये तो सुन्दर मानवतावादी मूल्य हैं। मार्क्स मुस्कुराए और कहा कि यह मानवतावाद है लेकिन निजी सम्पत्ति रहित है। यदि आप मानवतावाद से निजी सम्पत्ति निकाल दें तो यह मानवतावाद नहीं रहेगा और यही वजह है कि यह कम्युनिज्म बन जाता है–एक श्रेष्ठतर मूल्य बोध बन जाता है।

उत्पादन के साधनों पर इस सामाजिक मालिकाने म फिर कोई व्यक्ति मालिक नहीं होगा। मालिक और मजदूर जैसा कोई सम्बंध नहीं होगा। मजदूर खुद ही मालिक होंगे और साथ ही साथ उत्पादनकर्ता भी। यह मेरा, तेरा, इसका या उसका नहीं होगा बल्कि हमारा, हम सबका होगा। उत्पादन के साधनों पर ऐसे मालिकाने को नये जीवन आदर्श, नई नीति-नैतिकता की जरूरत होती है जो इस सामूहिक मालिकाने को गाइड कर सके। सामूहिक मालिकाने को व्यक्तिगत पसंद-नापसंद या व्यक्तिवादी धारणा के आधार पर निर्मित जीवनबोध, प्यार, स्नेह, आदर्श, नीति-नैतिकता के द्वारा संचालित नहीं किया जा सकता है। यहां विच्छेद लाना होगा। सामूहिकतावाद को, उत्पादन के साधनों पर सामूहिक मालिकाने के आधार पर निर्मित इस नये जीवनबोध को एक देश में इसकी गहरी पैठी हुई परम्पराओं और संस्कृति के साथ ठोस रूप में विकसित करना होगा। आप इसे किसी देश पर थोप नहीं सकते हैं। हमारे देश की सांस्कृतिक परम्पराओं व संस्कृति के साथ एक निरंतरता रखते हुए लेकिन इसके साथ एक विच्छेद लाते हुए हमें नया जीवनबोध निर्मित करना होगा, नीति-नैतिकता, संस्कृति को समेटे हुए जीवन की समाजवादी धारणा विकसित करनी होगी। संघर्ष का यह अति कठिन पहलू था और कॉमरेड घोष ने इस संघर्ष को शुरू किया और एक सम्पूर्ण, समग्र और नई धारणा, जीवन की कम्युनिस्ट अवधारणा प्रदान की। उन्होंने दिखाया कि आज व्यक्तिवाद दूषित हो गया है। व्यक्तिवाद इतना दूषित हो गया है कि अच्छे लोगों में, महान लोगों में भी यह संकट पैदा कर देता है। प्लेखानोव कोई साधारण व्यक्ति नहीं थे। लेनिन ने लिखा है 'प्लेखानाव को पढ़े बिना कोई एक प्रबुद्ध कम्युनिस्ट नहीं बन सकता है'। लेकिन वही प्लेखानोव क्या बन गए? अंतिम विश्लेषण में आप पाएंगे कि वे व्यक्तिवादी बन गए और इसी के चलते उनका पतन हुआ। काउत्सकी कोई साधारण नेता नहीं थे। उन्होंने एंगेल्स के साथ काम किया था। वे द्वितीय इंटरनेशनल के नेता थे। लिउ शाओ ची जिनकी पुस्तक 'एक अच्छा कम्युनिस्ट कैसे बने' हम आज भी पढ़ते हैं, वे अंततः व्यक्तिवाद का शिकार बन गए थे। कॉमरेड घोष ने दिखाया था कि आधुनिक संशोधनवाद भी व्यक्विाद के आधार पर विकसित हुआ था। एक समाजवादी समाज में बहुत लोग समाजवाद की बात करते हैं लेकिन असल में व्यक्तिवाद को अमल में लाते हैं। क्योंकि यह समाजवादी शब्दावली और क्रांतिकारी जुमलों के साथ प्रकट होता है इसलिए इसे समझना मुश्किल हो जाता है। यह बहुत ही कपट से भरा होता है। यही व्यक्तिवाद जो अतीत के कुप्रभाव के रूप में समाजवादी समाज में रह जाता है जिसे कॉमरेड घोष ने 'समाजवादी व्यक्तिवाद' की संज्ञा दी है, इसको अगर सांस्कृतिक क्रांति के माध्यम से उखाड़ नहीं फेंका तो यह समाजवाद के पतन का कारण बन जाता है जैसा कि रूस, चीन या वियतनाम में हुआ।

व्यक्तिवाद एक बहुत ही गंभीर समस्या है। इसको बड़ी बारीकी से समझना होगा। क्रांति से पहले यह पार्टी में एक समस्या, एक संकट पैदा कर देता है। व्यक्तिवाद गुटबाजी पैदा करता है; पार्टी टूट जाती है और गुटों व धड़ों में खंडित हो जाती है। गुटों के बीच कलह, गुटों में कहा-सुनी पार्टी को विभाजित कर देती है। कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया (सी.पी.आई.) कोई मामूली पार्टी नहीं थी। आज आप देख रहे हैं कि यह टुकड़े-टुकड़े हो रही है, टूट रही है, मर रही है। लेकिन इसकी शुरूआत में यह ऐसी नहीं थी। बल्कि जब हम स्कूली छात्र थे तो हमें याद है कि लोग केवल कांग्रेस और सी.पी.आई. की बात किया करते थे। भाजपा, आरजेडी, डीएमके, एआईडीएमके, टीडीपी, बीएसपी, एसएसपी जैसी सम्प्रदायिक और क्षेत्रीय पार्टियां तब नहीं थी। वही अविभाजित सीपीआई पार्टी, सीपीआई और सीपीआई(एम) में विभाजित हो गई। उसके बाद सीपीआई(एम) विभाजित हो गई सीपीआई(एमएल) में, फिर सीपीआई(एमएल) अनेक अन्य गुटों में विभाजित होती रही। सीपीआई(एम) पुनः एमसीपी, सीएमपी कितने ही गुटों में बंट गई। ये तमाम पार्टियां एक ट्रेंड (रुझान) को प्रतिबिंबित करती हैं–वह है व्यक्तिवाद यानी गुटबाजी। प्रत्येक नेता को केन्द्र करके गुट हैं। भाजपा या कांग्रेस में गुटों का होना स्वाभाविक है। ये बुर्जुआ पार्टियां हैं। लेकिन एक सही कम्युनिस्ट पार्टी में ऐसा नहीं होता है और न ही हो सकता है। लेकिन हम देखते हैं कि सीपीआई, सीपीआई(एम), आरएसपी, फारवर्ड ब्लाक –ये तमाम पार्टियां व्यक्तिवाद, गुटबाजी से ग्रसित हैं और एक के बाद दूसरी टूटन का शिकार हो रही हैं। इससे कॉमरेड घोष ने एक इतनी सशक्त पार्टी के निर्माण की जरूरत को समझ लिया था जो इस व्यवस्था को, इस राजसत्ता को, जो अपने प्रशासन, अपने संस्थानों और संगठनों से पूरी तरह लैस है उसे उखाड़ फेंक सके। एक इतनी आधुनिक, सिर से पांव तक हथियारों से लैस, इतनी शक्तिशाली राजसत्ता को ढीले-ढाले तौर से संगठित गुटों और धड़ों में बंटी पार्टी द्वारा उखाड़ फेंका नहीं जा सकता है। इसके लिए एक मजबूत ताकतवर पार्टी की जरूरत है जो यांत्रिक तौर पर नहीं बल्कि जनवादी तौर पर अति केन्द्रीकृत हो। एक जनवादी तौर पर केन्द्रीकृत पार्टी यांत्रिक तौर पर केन्द्रीकृत पार्टी से ज्यादा ताकतवर होती है क्योंकि यांत्रिक तौर पर केन्द्रित पार्टी में पार्टी के प्रति पार्टी कार्यकर्ताओं का समर्पण सचेत और स्वेच्छिक नहीं होता है। बुर्जुआ फौज की तरह नियमों द्वारा, निर्देशों से संचालित एक पार्टी अति यांत्रिक तौर पर केन्द्रीकृत संगठन होती है। 'आप को यह नहीं पूछना है क्यों, करो या मरो' के सिद्धांत पर बुर्जुआ फौज काम करती है। साधारण सिपाही, पैदल सेना के सिपाही–क्या वे इसमें विश्वास रखते हैं, भरोसा रखते हैं और इसके प्रति प्रतिबद्ध हैं। कुछ नहीं, उन्हें इसका पालन करना है नहीं तो उन्हें सजा मिलेगी इसीलिए वे पालन करते हैं। एक सही कम्युनिस्ट पार्टी में ऐसा नहीं होता है। प्रत्येक और किसी भी चीज के बारे में सत्य का पता लगाने के लिए यह संघर्ष है। किसी खास परिस्थिति में एक चीज के बारे में दो सत्य नहीं हो सकते हैं। और अगर हम सब विज्ञान और विशेषकर सभी विज्ञानों के विज्ञान–अति सशक्त विज्ञान–द्वन्द्वात्मक भौतिकवादी विज्ञान का अनुसरण करें और द्वन्द्वात्मक तौर पर विश्लेषण करें तो हम सभी एक चीज के बारे में एक ही सत्य पर पहुँचेंगे। उदाहरण के लिए यह मेज है और यह एक माइक्रोफोन है। हम बड़ी आसानी से इसे स्वीकार करेंगे। क्योंकि इनका अस्तित्व एक सत्य है, एक वस्तुगत सत्य है। यह स्पष्ट दृष्टि गोचर है। लेकिन अमूर्त क्षेत्र में भी जैसे कौन सी नीति-नैतिकता और संस्कृति कम्युनिस्टों और कम्युनिस्ट आन्दोलन को गाइड करेगी, इन तमाम धारणाओं के बारे में भी सत्य एकाधिक नहीं हो सकते हैं। यहां तक कि प्यार, स्नेह इत्यादि के बारे में भी दो सत्य नहीं हो सकते हैं। एक विचारधारा के आधार पर जब हम एक सत्य पर पहुँचते हैं, तो वही पार्टी में जनवादी केन्द्रीयता विकसित करता है। कैसे? यह वैचारिक केन्द्रीयता है। जैसे कि भारत एक पूँजीवादी राजसत्ता है, हम सब विश्लेषण करते हैं, इस पर सहमत होते हैं और तब हम एक निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि हां यह एक पूँजीवादी राजसत्ता है। तब स्वाभाविक रूप से जो आता है वह यह है कि पूँजीपति वर्ग राजसत्ता में है और हमें पूँजीपति वर्ग को सत्ता से उखाड़ फेंकना होगा, पूँजीवादी व्यवस्था को ही उखाड़ फेंकना होगा। पूँजीवादी व्यवस्था, पूँजीवादी समाज का स्थान केवल समाजवादी व्यवस्था ही ले सकती है कोई और नहीं। क्या यह हमारी पसंद या नापसंद पर निर्भर है? क्या यह मार्क्स की पसंद या नापसंद के अनुसार है? नहीं, ऐतिहासिक तौर पर ऐसा नहीं हो सकता है। उत्पादन के साधनों पर व्यक्तिगत मालिकाने का स्थान सामाजिक मालिकाना ही लेगा। जब हम इन सब पर सहमत होते हैं तभी वैचारिक केन्द्रीयता विकसित होती है। विकसित वैचारिक केन्द्रीयता के आधार पर सांगठनिक केन्द्रीयता ही एक पार्टी को जनवादी तौर पर केन्द्रित पार्टी बनाती है। इस प्रक्रिया में, सामूहिक नेतृत्व की ठोस धारणा भी विकसित होती है। ये विचार जो इस प्रकार विकसित होते हैं वे हवा में नहीं रहते हैं। ये उन तमाम व्यक्तियों के माध्यम से व्यक्तिकृत अभिव्यक्ति पाते हैं जो इस संघर्ष में हिस्सा लेते हैं। प्रकृति में दो चीजें मिलती-जुलती तो हो सकती हैं लेकिन हूबहू एक जैसी नहीं हो सकती है–यहां तक कि पानी की दो बूंदें या रेत के कण भी नहीं। इसी तरह, दो व्यक्ति भी हूबहू एक जैसे नहीं होते हैं। वह व्यक्ति जिसमें यह धारणा सर्वोच्च रूप लेती है वही सभी के नेता के रूप में उभर कर आता है। जो इस संघर्ष में हैं–वे सब सिर्फ विचार को ही नहीं बल्कि संस्कृति को भी समान रूप से हासिल नहीं कर पाते हैं, जिसमें विचार और संस्कृति दोनों सर्वोत्तम रूप ग्रहण करते हैं वही सामूहिक नेतृत्व की ठोस अभिव्यक्ति के रूप में उभरता है। जब पार्टी के तमाम संगठन–केन्द्रीय कमेटी, राज्य कमेटियां, जिला कमेटियां, स्थानीय कमेटियां इस जनवादी केन्द्रीयता के आधार पर विकसित होती हैं तभी यह एक सही कम्युनिस्ट पार्टी बनती है। यह लेनिनवादी अवधारणा है। कॉमरेड शिवदास घोष ने हमारे देश में इस अवधारणा को विकसित किया और इस अवधारणा के आधार पर हमारी पार्टी का निर्माण किया। ऐसी एक पार्टी ही इतनी सशक्त हो सकती है कि इस दमनात्मक पूँजीवादी व्यवस्था को उखाड़ फेंक सके और नई सभ्यता का निर्माण कर सके।

कॉमरेड्स यहां हमें एक बात समझनीहोगी। जैसे लेनिन ने बताया कि राजसत्ता पर कब्जा करना क्रांति का मुख्य प्रश्न है। यह मुख्य प्रश्न है लेकिन यही सब कुछ नहीं है। राजसत्ता हाथ में आए बिना हम देश की अर्थव्यवस्था को नहीं बदल सकते हैं। लेकिन कौन सत्ता दखल करेंगे? केवल वहीं जिन्होंने अपने अन्दर जीवन और संस्कृति की नई धारणा को विकसित किया है, जो सर्वहारा क्रांतिकारी बन गए हैं। क्या मजदूरों और शोषितों का विशाल तबका तुरंत कम्युनिस्ट बन जाता है? वस्तुतः वे नहीं बन पाते हैं। लेकिन निश्चित ही इसका मायना यह नहीं है कि उन्हें कम्युनिस्ट संस्कृति से लैस नहीं किया जा सकता है। जब तक मजदूर सही मायने में कम्युनिस्ट संस्कृति, जीवन के बारे में इसकी नीति-नैतिकता से लैस नहीं हो जाते हैं तब तक वे सत्ता दखल नहीं कर सकते हैं। मार्क्स ने बताया कि मजदूर वर्ग दुनिया को बदलेगा लेकिन दुनिया को बदलने के लिए उन्हें पहले खुद को बदलना होगा। इस आधार पर उन्हें कौन संगठित व सचेत करेगा? यह जिम्मेदारी सचेत सर्वहारा, कम्युनिस्ट पार्टी के नेताओं और सदस्यों पर आयद होती है। लेकिन सत्ता दखल के बाद जिसकी सर्वाधिक जरूरत है वह है एक नए समाज, नए सम्बंधों का निर्माण करना। उच्च सर्वहारा संस्कृति के बिना आप क्रांति नहीं कर सकते हैं। पुराने विचारों, पुराने विश्वासों, पुरानी आदतों, पुरानी परम्पराओं, पुराने रीति-रिवाजों को बरकरार रखते हुए एक नई सभ्यता को विकसित नहीं किया जा सकता है। इनके रहते क्या एक नए समाज का निर्माण किया जा सकता है? इन तमाम पुरानी आदतों, दस्तूरों और रिवाजों को बदलने के लिए एक सर्वव्यापक संघर्ष की जरूरत होती है। यहां तक कि पुराना हृदयावेग, स्नेह-प्यार-ममता की अनुभूति जो हमारे अन्दर पुराने जीवनबोध के आधार पर विकसित हुआ है उसे भी बदलना होगा और उसकी जगह सामूहिकतावाद पर आधारित नई भावनाओं को अपनाना होगा। जब जीवन और हृदयावेग के बारे में यह दृष्टिकोण एक आदमी में विकसित होता है तब वह आदमी महान बन जाता है। जब यह समाज में विकसित होती है तब यह एक महान समाज बना देती है।

(शेष पृष्ठ 5 पर)

कॉ. कृष्ण चक्रवर्ती का भाषण...

(पृष्ठ 4 का शेष)

कॉमरेड घोष ने इस महान और श्रेष्ठ संघर्ष को विकसित किया। कॉमरेडों को उनके संघर्ष के इस पहलू को गहराई से समझना होगा। व्यापक राजनीतिक सवालों को समझना बहुत कठिन नहीं है। यह समझने के लिए कि भाजपा ऐसी है, कांग्रेस वैसी है बहुत ज्यादा बौद्धिक क्षमता की जरूरत नहीं होती है। एक आम आदमी भी ऐसी चीजों को समझ सकता है। लेकिन क्रांति के लिए जो जरूरी है वह है ऊंचा जीवनबोध और मूल्यबोध, प्यार-स्नेह की उन्नत धारणा। किस तरह का स्नेह? क्रांतिकारी सम्बंधों के रूप में सभी सम्बंधों को बनाना चाहिए। मैं किसी से प्यार करता हूँ वह क्रांति के लिए है। यदि कोई मुझे प्यार करता है तो वह क्रांति के लिए है न कि किसी अन्य सम्बंध के लिए। यह एक महान चीज है और यह धारणा अगर समाज में लोगों की बड़ी संख्या में विकसित हो जाए और अगर यह संस्कृति पूरे समाज को प्रभावित करती है तभी केवल क्रांति हो सकती है। इस महान क्रांतिकारी संघर्ष के दौरान, आदमी बदलता है। उसके विचार, आदत, अध्ययन, अभ्यास, जीवन की उसकी पूरी धारणा–सभी कुछ बदलता है। आदमी एक नया आदमी बन जाता है, अब वह वही पुराना आदमी नहीं रहा। राजनीतिक, नैतिक, सांस्कृतिक, वैचारिक तौर से वह एक बदला हुआ आदमी है। वह एक क्रांतिकारी बन जाता है। इसी प्रक्रिया में एक आदमी मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन, स्टालिन, माओ त्से-तुंग और कॉमरेड शिवदास घोष जैसा महान क्रांतिकारी बन जाता है।

सीपीआई के नेतागण इस संघर्ष को समझ नहीं पाए। उन्होंने मार्क्सवाद-लेनिनवाद को बौद्धिक तौर पर समझने का प्रयास किया और वे मार्क्सवादी साहित्य के अच्छे जानकार थे। यह सच है कि डांगे, जोशी, रणदिवे और सीपीआई के अन्य कई नेतागण कोई साधारण आदमी नहीं थे। उनमें से अनेक ने काफी कुर्बानियां दी, मार्क्सवाद-लेनिनवाद को अपनाते हुए इस देश में कम्युनिस्ट आन्दोलन की खातिर अपने जीवन को कुर्बान करने के लिए वे आए थे और इसके लिए उन्होंने ईमानदारी से प्रयास भी किया। उनकी रचनाएं पढ़िए और आप यह समझ पाएंगे। आज के सीपीआई, सीपीआई(एम) के कम्युनिस्ट नेताओं को देखकर, हमें यह निष्कर्ष नहीं निकाल लेना चाहिए कि वे सभी शुरूआत से ही ऐसे थे। उनमें से अनेक ईमानदार थे और क्योंकि वे ईमानदार थे, कॉमरेड घोष को गहराई से अध्ययन करना पड़ा कि इन तमाम गुणों के बावजूद वे क्यों एक कम्युनिस्ट पार्टी विकसित नहीं कर सके? ऐसे ईमानदार लोग, ऐसे प्रबुद्ध लोग, कुर्बानी की भावना से प्रेरित ऐसे संघर्षशील लोग भारत में क्यों एक कम्युनिस्ट पार्टी का निर्माण नहीं कर सके? कहां वे असफल रहे? ठीक है कि उन्होंने सैद्धांतिक रूप से मार्क्सवाद-लेनिनवाद को स्वीकार किया, ईमानदारी से वे इसमें विश्वास करते थे लेकिन इसे जीवन में नहीं अपना सके। उन्होंने जीवन की अपनी पुरानी धारणा को बदलने के लिए संघर्ष संचालित नहीं किया। व्यक्तिवाद उनमें रह गया हालांकि इस भद्दी शक्ल में नहीं जैसा आज आप इन पार्टियों के नेताओं में देखते हैं। अत: उनका चरित्र पेटी-बुर्जुआ रह गया और इसीलिए वे एक सही कम्युनिस्ट पार्टी का निर्माण नहीं कर सके।

कॉमरेड शिवदास घोष ने जीवन के सभी पहलुओं को समेटे हुए एक समग्र समाजवादी संघर्ष संचालित करते हुए पार्टी निर्माण के अपने संघर्ष को शुरू किया और उन सभी को जो पार्टी निर्माण के लिए आगे आए और खुद को एक कम्युनिस्ट के रूप में विकसित करने के लिए इस संघर्ष में शामिल किया। यही वजह है कि वे इस देश में एक सही कम्युनिस्ट पार्टी, सोशलिस्ट यूनिटी सेंटर आफ इंडिया (कम्युनिस्ट) का निर्माण कर सके।

आदमी प्रक्रिया की उपज है। कॉमरेड्स इस बात को भी हमें बहुत गहराई से समझना चाहिए। एक सही कम्युनिस्ट पार्टी का निर्माण करना असल में एक पुराने समाज में एक नई प्रक्रिया का निर्माण करना है। बुर्जुआ समाज में सोचने और काम करने की प्रक्रिया व्यक्तिवाद पर आधारित एक प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया में आज आदमी न केवल व्यक्तिवादी और स्वार्थी बनता जा रहा है बल्कि इससे भी बदतर, आत्म केन्द्रित बनता जा रहा है। किसी अन्य के लिए या किसी अन्य चीज के लिए नहीं बल्कि वह सिर्फ अपने से ही सरोकार रखता है, ठेठ व्यक्तिवादी आत्म-केन्द्रित आदमी इस पतित पूँजीवादी संस्कृति की उपज है जो तमाम पूँजीवादी देशों में विकसित हो रही है। सच्चे और ईमानदार लोग परेशानियां झेल रहे हैं। वे एक बदलाव चाहते हैं। वे समझ रहे हैं कि यह बहुत तकलीफदेह है। वे प्यार, सम्बंध, स्नेह, कोमल और नाजुक भावनाएं चाहते हैं, लेकिन ये सब मृत्यु की ओर अग्रसर इस सभ्यता में, मरणासन्न पतनोन्मुख पूँजीवाद में मर रही हैं। तमाम सम्बंध स्वार्थ सिद्धि के लिए बनाए या तोड़े जाते हैं। आत्म-केन्द्रित आदमी का समाज के लिये या अपनी खुद की पत्नी या बच्चे के लिए भी कोई सरोकार नहीं है। लेकिन समाज के प्रति सही सरोकार रखे बिना आदमी सही मायने में आदमी नहीं बन सकता है। सही मायने में इन्सान वही है जिसमें सामाजिक दायित्वबोध है जिससे वह सब कुछ प्राप्त करता है। हम समाज से ले रहे हैं लेकिन समाज को बदले में कितना दे रहे हैं? जब हम समाज से लेते हैं, तो यह हमारा न्यूनतम दायित्व और नैतिकता बनती है कि अगर ज्यादा न भी हो तो कम से कम उतना तो हमें वापस देना ही चाहिए जितना कि हम समाज से लेते हैं। लेकिन जितना भी ज्ञान जो हम समाज से प्राप्त करते हैं अगर हम सिर्फ पैसा कमाने में इस्तेमाल करें तो यह क्या नजरिया होगा? इस नजरिए से आदमी पतित होता है।

कॉमरेडों को समझना चाहिए कि अगर एक साम्यवादी समाज का निर्माण करने का मायना है एक नई संस्कृति हासिल करना। इस संस्कृति को अपने अन्दर धारण किए बिना और समाज की व्यापक शोषित-पीड़ित जनता को इस संस्कृति से लैस किए बिना, हम राजसत्ता दखल नहीं कर सकते हैं। इसी वजह से लेनिन ने ठोस रूप से बताया सांस्कृतिक क्रांति, सत्ता दखल करने वाली क्रांति की पूर्वगामी है। यही संघर्ष है। क्रांति केवल तभी होती है। कॉमरेड घोष ने यही संघर्ष विकसित किया।

क्योंकि बुर्जुआ जनतांत्रिक क्रांति के माध्यम से एक राष्ट्र निर्माण का आन्दोलन हमारे देश में पूरी तरह सम्पन्न नहीं हो सका, कॉमरेड घोष ने दिखाया था कि हालांकि राजनैतिक, आर्थिक तौर से हम एक राष्ट्र बन गए हैं लेकिन सांस्कृतिक तौर से, भाषागत तौर से, जाति और सामूदायिक रूप से हम बंटे ही रह गए। इसकी वजह से हर बीते दिन के साथ क्षेत्रीय और साम्प्रदायिक पार्टियों द्वारा विभाजनकारी प्रवृतियों को भड़काया जा रहा है, लोगों में और भी फूट डाली जा रही है। इसके विपरीत, देश में हर जगह जहां कहीं भी आप एसयूसीआई(सी) के लोग देखते हैं, आप पाएंगे कि उच्च संस्कृति और जीवन की धारणा उनमें एक समान है। बहुत बड़ी संख्या से जो लोग हमारा समर्थन करते हैं वे भी अपने स्तर पर इस संस्कृति को अपना रहे हैं और इन विघटनकारी प्रवृतियों का मुकाबला करते हुए, इस श्रेष्ठ संस्कृति से एक नए एकताबद्ध भारत का उदय हो रहा है। इस देश में जनता के व्यापक तबकों के बीच इस संस्कृति की बढ़ोतरी के साथ, इस संघर्ष के दौर में से, एक संयुक्त समाजवादी भारत उभर कर आएगा। इस विचार और संघर्ष के प्रसार के साथ पूरी दुनिया में साम्यवाद की ओर अग्रसर, सर्वहारा क्रांति पनपेगी।

ऐसा एक महान विचार है जिसे कॉमरेड घोष ने पैदा किया। लेकिन इस विचार को लागू करने के लिए जरूरत है एक क्रांतिकारी पार्टी की। अगर क्रांतिकारी पार्टी नहीं है तो चाहे कितना ही जोरदार प्रयास आप करें इस क्रांतिकारी विचार को आप लागू नहीं कर सकते हैं। कॉमरेड समझने का प्रयास करिए कि पार्टी संगठन बहुत महत्वपूर्ण है। पार्टी के बिना हम क्रांति सम्पन्न नहीं कर सकते हैं। लेनिन ने दिखाया था कि क्रांतिकारी सिद्धांत के बिना क्रांति नहीं होगी, इसी तरह एक क्रांतिकारी पार्टी के बिना भी क्रांति नहीं होगी। एक क्रांतिकारी पार्टी के बिना क्रांतिकारी विचार भी नहीं आ सकते हैं। एक प्रक्रिया का अनुसरण करने के चलते मार्क्स में क्रांतिकारी विचार आए लेकिन जैसे ही समझा उन्होंने पार्टी का निर्माण करना शुरू कर दिया। मार्क्स से लेकर शिवदास घोष तक आप किसी भी मार्क्सवादी चिन्तनकार की बात करें, चाहे हो ची मिन जैसे सभी महान नेताओं की बात करें–उन सभी ने पार्टी का निर्माण किया। अत: कॉमरेड्स, हमारा संघर्ष एक महान संघर्ष है। एस.यू.सी.आई.(सी) की स्थापना महान शिक्षक, नेता और पथ-प्रदर्शक कॉमरेड शिवदास घोष द्वारा की गई है। उन्होंने इस पार्टी का निर्माण किया। इस पार्टी का सदस्य होना बहुत बड़ा सम्मान है। हम सभी इस पार्टी के सदस्य हैं। क्रांति सम्पन्न करने के लिए हमें क्रांतिकारियों की तरह आचरण करना चाहिए और जहां कहीं भी हम हैं संगठन का निर्माण करना चाहिए। 'एक क्रांतिकारी मौजूद है' इसका मायना है कि उसके इर्द-गिर्द क्रांतिकारी वातावरण बना रहता है। उस वातावरण के सम्पर्क में आने से ही कोई महान क्रांतिकारी विचार, उच्च क्रांतिकारी संस्कृति के प्रति आकर्षित होता है। विचार और संस्कृति एक दूसरे के पूरक और अनुपूरक है। एक और महत्वपूर्ण बात हम सभी को समझ लेनी चाहिए कि आदमी प्रक्रिया की उपज है। बुर्जुआ समाज में सोचने और काम करने में बुर्जुआ प्रक्रिया काम करती है। इस प्रक्रिया के विपरीत, एक कम्युनिस्ट पार्टी के निर्माण का संघर्ष है समाज के अन्दर चिन्तन और क्रियाकलाप दोनों में एक नई प्रक्रिया का निर्माण करना। इस प्रक्रिया में अगर मैं खुद को पूरी तरह स्वेच्छा से खुशी-खुशी समर्पित करता हूँ तो मैं एक मार्क्सवादी बन जाता हूँ। अगर मैं पूरी तरह समर्पित न करूँ तो क्या मैं अधर में रह सकता हूँ? ऐसा नहीं हो सकता है। जिस हद तक मैंने समर्पित किया है उसी हद तक में कम्युनिस्ट बना हूँ सह सच है लेकिन जिस हद तक मैं समर्पित नहीं हुआ हूँ उस हद तक बुर्जुआ विचार, चिन्तन, संस्कृति मेरे अन्दर मौजूद है। अत: कॉमरेड्स हमें पूरी तरह, समग्र रूप से, स्वेच्छा से इस प्रक्रिया के प्रति समर्पित होना है। इस धारणा की सुन्दर उपज एक पेशेवर क्रांतिकारी बनने का प्रयास करना है जिसका पेशा ही सिर्फ क्रांति है। कॉमरेड घोष ने इस धारणा को पार्टी में स्पष्ट तरीके से रखा है।

उन्होंने पेशेवर क्रांतिकारी की धारणा को सदस्यता का सर्वोच्च स्तर बनाया। हमारी पार्टी में पेशेवर क्रांतिकारी के अलावा कोई भी केन्द्रीय कमेटी का सदस्य नहीं बन सकता है। सभी राज्यों के सचिव पेशेवर क्रांतिकारी-स्टाफ सदस्य होंगे। कॉमरेड शिवदास घोष ने कहा कि सभी स्टेट कमेटी सदस्यों के 50 प्रतिशत सदस्य पेशेवर क्रांतिकारी, स्टाफ सदस्य होने चाहिएं। अगर हम इस लक्ष्य को पूरा कर सकें तो इससे पार्टी का स्तर ऊंचा उठेगा। तब इससे लाज़मी तौर पर पार्टी के सदस्यों के स्तर में तेजी से बढ़ोतरी होगी। इससे ही सुनिश्चित होगा कि कोई गिरावट नहीं आएगी। एक समय, तमाम खूबियों के साथ एक कम्युनिस्ट पार्टी के रूप में हमारी पार्टी उभरी है, इसकी कोई गारंटी नहीं है कि पार्टी कभी गिरेगी नहीं। अगर संघर्ष में ढील आ जाए, इसको हल्का कर दिया जाए तो यह गिर सकती है। अगर संघर्ष जारी रहता है और आगे बढ़ता है तो पार्टी विकसित होगी। यही एकमात्र गारंटी है। इस संघर्ष में अगर कोई कॉमरेड शिवदास घोष जैसा नहीं बन पाए फिर भी उनके काफी करीब तक पहुँच सकेगा। कॉमरेड शिवदास घोष खुद भी इस संघर्ष की उपज थे। हमारे सभी कॉमरेडों का यही लक्ष्य रहेगा। उन्होंने दिखाया था कि इस प्रक्रिया के प्रति समर्पित हुए बिना कोई कम्युनिस्ट नहीं बन सकता है। यह संघर्ष क्रांतिकारियों का महान संघर्ष है।

ऐसे एक अवसर पर सभी कॉमरेडों को यह शपथ लेनी चाहिए कि कॉमरेड शिवदास घोष के योग्य शिष्य बनेंगे, उच्च समझ के साथ पार्टी का निर्माण करेंगे और पार्टी को सुदृढ़ बनाएंगे। मैं अपने तजुर्बे से आप कॉमरेडों को बता सकता हूँ कि क्रांति बहुत दूर नहीं है। मैंने पार्टी को बढ़ते हुए देखा है। अब इसका विकास काफी तेज और दिखाई देने वाला है। जितना ज्यादा हम कॉमरेड विकसित होंगे पार्टी और भी विकसित होगी और बढ़ेगी तथा क्रांति नजदीक आएगी। समाज क्रांति के लिए पुकार रहा है। हमें इसे लाना है। हमें इस आह्वान का प्रत्युत्तर देना है। यह हम तभी कर सकते हैं जब पार्टी को बहुत शक्तिशाली बना दें। इतनी शक्तिशाली कि यह पूँजीवादी राजसत्ता को उखाड़ फेंक सके और सर्वहारा की राजसत्ता कायम कर सके। आप ऐसा ही करेंगे। इस विश्वास के साथ में समाप्त करता हूँ। हमारे महान नेता, शिक्षक और पथ प्रदर्शक कॉमरेड शिवदास घोष–लाल सलाम! ■■

अन्ना हजारे की गिरफ्तारी व जनवादी अधिकारों पर हमले के खिलाफ जन संगठनों द्वारा 19 अगस्त को देशभर में प्रदर्शन

सत्य की अभिव्यक्ति द्वन्द्वात्मक चिन्तन पद्धति के द्वारा सामूहिक प्रक्रिया के माध्यम से ही हो सकती है–कॉ. कृष्ण चक्रवर्ती

जयपुर (राजस्थान): 13 अगस्त 2011 को कॉ. शिवदास घोष का 35वां स्मृति दिवस का. गिरिजेश्वर सिंह ,सचिव राजस्थान एसयूसीआई(सी) की अध्यक्षता में आयोजित किया गया तथा 13 से 15 अगस्त तक शिक्षण शिविर का संचालन किया गया। सभा के मुख्य वक्ता थे एसयूसीआई(सी) के पोलिट ब्यूरो व केन्द्रीय कमेटी के सदस्य का. कृष्ण चक्रवर्ती। सभा की कार्यवाही कॉ. जी. एस. सोंग से प्रारम्भ हुई। कॉ. गिरिजेश्वर सिंह ने अपने वक्तव्य में कहा कि वर्तमान पूंजीवादी व्यवस्था का संकट गहरे से गहरा होता चला जा रहा है और असमाधेय है जैसा कि कॉ. शिवदास घोष ने बताया कि पूंजीवादी व्यवस्था का संकट अब डेली और आवरली का संकट है। पूंजीवादी व्यवस्था के पास इसका कोई समाधान नहीं है। यह पूंजीवाद अब मरणासन्न अवस्था में पहुंच चुका है परन्तु यह अपने आप नहीं मर सकता इसके लिए चाहिए एक सही और सक्षम क्रान्तिकारी पार्टी का नेतृत्व। पूंजीवाद के विरुद्ध लोग बेरोजगारी, मंहगाई, व सामाजिक कल्याण की अन्य मांगों को लेकर पूरे विश्व में संघर्ष कर रहे हैं परन्तु कहीं पर भी आन्दोलन सही क्रान्तिकारी दिशा नहीं ले पा रहा है। हमारे देश में भी सर्वहारा के महान नेता कॉ. शिवदास घोष ने प्रतिकूल परिस्थितियों में संघर्ष करते हुए एक सही क्रांतिकारी पार्टी एसयूसीआई(सी) का गठन 24 अप्रैल 1948 को किया। अत: आज का दिन हमारे लिए संकल्प का दिन है कि हम मार्क्सवाद-लेनिनवाद-शिवदास घोष चिन्तनधारा से लैस होकर पार्टी को मजबूती प्रदान करें ताकि सर्वहारा के क्रान्ति के झण्डे को उठाकर अपनी मंजिल तक ले जाने में कामयाब हो सकें। पोलिट ब्यूरो एवं केन्द्रीय कमेटी के सदस्य कॉ. कृष्ण चक्रवर्ती ने मुख्य वक्तव्य रखा और उन्होंने इस अवसर पर इस संकल्प को दोहराया कि सर्वहारा वर्ग की पार्टी द्वन्द्वात्मक प्रक्रिया की उपज होती है, यह द्वन्द्वात्मक प्रक्रिया यदि पार्टी में जारी रहे तो पार्टी तमाम झंझावतों को झेलते हुए अपनी मंजिल की ओर बढ़ती रहती है। उन्होंने बताया कि प्रत्येक देश में कम्युनिस्ट पार्टी का गठन वहां की विशेष परिस्थितियों में मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धांतों की रोशनी में किया जाता है। इसी प्रकार भारत में कॉ. शिवदास घोष के चिन्तन की रोशनी में लेनिनिस्ट प्रिंसीपल के आधार पर पार्टी का गठन हुआ है। यूरोप के सभी देशों में और अरब जगत के कई देशों में व्यापक जन आक्रोश, जनान्दोलन उभर रहा है किन्तु क्रान्तिकारी पार्टी के अभाव में पूंजीवाद-विरोधी समाजवादी क्रान्ति का रूप नहीं ले पा रहा है। पार्लियामेण्टरी संघर्ष में हम इसलिए जाते हैं ताकि गैर पार्लियामेण्टरी संघर्ष को तेज किया जा सके। क्रान्तिकारी पार्टी के विकास से तात्पर्य परिमाणात्मक के साथ गुणात्मक विकास से समझना चाहिए। कॉ. शिवदास घोष के हवाले से उन्होंने बताया कि कोई भी मनुष्य गुण-दोषों से परे नहीं है जब किसी मनुष्य में गुण डॉमीनेन्ट होते हैं तो उसे अच्छा इंसान कहा जाता है और यदि उसमें दोषों का पहलू डॉमीनेन्ट हो जाय तो उसे बुरा आदमी कहा जायेगा। क्रान्तिकारी पार्टी का नेता भी इन गुण-दोषों से परे नहीं होता है। इसलिए कोई नेता कभी गलती भी कर सकता है लेकिन गलती करते ही नेता का पतन हो गया ऐसा मानना सही मूल्यांकन नहीं है। यदि कोई इस तरह से मूल्यांकन करता है तो यह गलत है। एक पूंजीवादी पार्टी में नेता व कार्यकर्ता व्यक्तिवादी तरीके से कार्य करते हैं इसलिए उसमें ग्रुपों का जन्म होता है परन्तु सर्वहारा वर्ग की पार्टी में नेता और कार्यकर्ताओं का कार्य करने एवं निर्णय लेने का ढंग सामूहिक होता है, अत: पार्टी के समस्त कार्यकर्ताओं का सामूहिक ज्ञान जब सर्वोताम ढंग से किसी एक व्यक्ति के सम्पूर्ण चरित्र से अभिव्यक्त होता है वही नेता होने के योग्य होता है। नेता में यदि कोई दोष नजर आता है तो वह उसे बताना चाहिए, इससे नेता का विकास होगा क्योंकि यदि नेता को अपने दोष के बारे में पता लगता है तो इससे नेता को अपने दोष को दूर करने में सहयोग मिलेगा और यदि नेता ऐसा नहीं करता है तो उससे उच्च ऑथोरिटी को यह तथ्य ध्यान में लाना चाहिए। किसी नेता के दोषों को दूर करने का यही सही प्रोसेस है। सत्य की अभिव्यक्ति इस प्रकार द्वंद्वात्मक पद्धति के द्वारा सामूहिक प्रक्रिया के माध्यम से ही हो सकती है। स्मृति सभा में मुख्यवक्ता के अतिरिक्त का. राजमल शर्मा (कोटा), कॉ. शंकर दैया (झुझुनू), कॉ. गणेशन (बीकानेर), कॉ. बी.के.जैन (भीलवाड़ा), कॉ. आर.एस. सैनी (अलवर), कॉ. छाजूराम (जोधपुर) तथा कॉ. रामदयाल (जयपुर) ने भी संक्षेप में अपनी बात रखी। का. अविनाश ने सभा का संचालन किया। शिक्षण शिविर में कॉ. कृष्ण चक्रवर्ती ने द्वन्द्वात्मक एवं ऐतिहासिक भौतिकवाद पर विस्तृत चर्चा रखी तथा कार्यकर्ताओं के सवालों के जवाब दिये। क्रांतिकारी पार्टी के निर्माण की प्रक्रिया, पूंजीवाद-विरोधी समाजवादी क्रांति की रणनीति एवं रणकौशल के बारे में भी उन्होंने चर्चा की। सभा का समापन अन्तर्राष्ट्रीय गान से हुआ।

भ्रष्टाचार के खिलाफ देशव्यापी आंदोलन के समर्थन में छात्र, युवा एवं महिलाओं ने निकाला एकजुटता मार्च

पटना, 19 अगस्त: भ्रष्टाचार के खिलाफ चल रहे देशव्यापी आंदोलन के समर्थन में आज छात्र संगठन ऑल इंडिया डेमोक्रेटिक स्टुडेन्ट्स ऑर्गेनाइजेशन (एआईडीएसओ), युवा संगठन ऑल इंडिया डेमोक्रेटिक यूथ ऑर्गेनाइजेशन (एआईडीवाईओ), महिला संगठन ऑल इंडिया महिला सांस्कृतिक संगठन (एआईएमएसएस) तथा मजदूर संगठन ऑल इंडिया यूनाइटेड ट्रेड यूनियन सेंटर (एआईयूटीयूसी) ने संयुक्त रूप एकजुटता मार्च निकाला। मार्च दिनकर गोलम्बर से निकल कर नाला रोड, ठाकुरबाड़ी रोड, बारी पथ होते हुए गांधी मैदान स्थित भगत सिंह चौक पहुंचा। मार्च में शामिल लोग 'भ्रष्टाचार पर रोक लगाओ', 'जनवादी अधिकारों पर हमला बंद करो', 'न्यायसंगत आंदोलनों पर दमन बंद करो', 'जन आंदोलनों पर पुलिस दमन नहीं चलेगा', 'भ्रष्टाचार-कदाचार के खिलाफ जन आंदोलन तेज करें' आदि नारे लगा रहे थे।

भागलपुर (बिहार) जिला छात्र सम्मेलन

बेतहाशा फीस वृद्धि, सेमेस्टर प्रणाली, शिक्षकों की भारी कमी, यौन शिक्षा एवं शैक्षिक अराजकता एवं भ्रष्टाचार के खिलाफ 11 अगस्त 2011 को खुदीराम बोस के शहादत के 103 वें वर्ष के मौके पर ऑल इण्डिया डीएसओ का तीसरा भागलपुर जिला छात्र सम्मेलन दिनकर भवन ओल्ड पी.जी. कैम्पस, भागलपुर में सम्पन्न हुआ। सबसे पहले भागलपुर रेलवे स्टेशन से जुलुस निकाला गया। इसमें सरकार द्वारा लायी जा रही शिक्षा-विरोधी नीतियों के खिलाफ छात्र-छात्राओं द्वारा जोश के साथ नारे लगाये गये। दिनकर भवन में कार्यक्रम की शुरूआत शहीद वेदी पर माल्यार्पण के साथ हुई। कार्यक्रम की अध्यक्षता ऑल इण्डिया डीएसओ के संयुक्त सचिव रौशन कुमार रवि ने की।

इस अवसर पर ऑल इण्डिया डी. एस.ओ. के पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष दीपक कुमार, प्रो. (डॉ.) गुरुदेव पोद्दार, राज्य सचिव सूर्यकर जितेन्द्र, सचिव मंडल सदस्य अनिल कुमार, कमल किशोर, भूपेन्द्र सिंह, रवि कुमार सिंह, आदि उपस्थित थे। इस अवसर पर गठित बत्तीस सदस्यीय जिला कमेटी में रौशन कुमार रवि को अध्यक्ष, रवि कुमार सिंह, मधु कुमारी, दिवाकर भारती को उपाध्यक्ष, गुड्डु कुमार को सचिव, कोषाध्यक्ष सह कार्यालय सचिव श्याम देव को सर्वसम्मति से चुना गया। इस मौके पर सम्मेलन के मुख्य वक्ता एवं ऑल इण्डिया डीएसओ के राज्य सचिव सूर्यकर जितेन्द्र नवनिर्वाचित सदस्यों का क्रांतिकारी अभिवादन करते हुए छात्रों स शिक्षा के क्षेत्र में बढ़ रहे निजीकरण, व्यापारीकरण के खिलाफ उठ खड़ा होने की अपील की।

पुलिस जुल्म के विरोध में पुतला दहन

भागलपुर 13/8/11 को पटना में नाला रोड स्थित लंगर टोली गली की साफ सफाई एवं जल जमाव जैसी समस्याओं के खिलाफ शांतिपूर्ण तरीके से धरने पर बैठे आम नागरिकों एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं पर डी.एस.पी. रामाकांत प्रसाद एवं पुलिस बल द्वारा बर्बरतापूर्ण लाठी चार्ज किये जाने, महिला सामाजिक कार्यकर्ताओं एवं छात्र नेताओं के साथ अभद्र व्यवहार करने एवं पांच छात्र नेता ऑल इण्डिया डीएसओ के बिहार राज्य सचिव सूर्यकर जितेन्द्र, बिहार राज्य सचिव मंडल सदस्य अनिल कुमार, पटना जिला सचिव सुमन कुमार, राहुल कुमार एवं कृष्णमोहन की गिरफ्तारी एवं पुलिस हिरासत में बर्बरतापूर्ण पिटाई के विरोध में भागलपुर रेलवे स्टेशन गोलम्बर चौक पर एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) एवं छात्र संगठन ऑल इण्डिया डीएसओ द्वारा मुख्य मंत्री नीतीश कुमार का पुतला दहन किया गया तथा जनविरोधी सरकार एवं पुलिसिया दमन के खिलाफ जोरदार नोर लगाये गये। नुक्कड़ सभा को संबोधित करते हुए ऑल इण्डिया डीएसओ के जिला सचिव गुडडु कुमार ने कहा की यह जनांदोलन पर हमला है। वहीं एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) पार्टी इंचार्ज रौशन कुमार रवि ने सरकार से मांग की कि छात्र नेताओं को बिना शर्त रिहा किया जाए। बर्बरतापूर्ण लाठी चार्ज की न्यायिक जांच कर दोषियों को कठोर दंड दिया जाए। डी.एस.पी. रामाकांत प्रसाद को तुरंत बर्खास्त किया जाए। इस प्रकार की घटना की पुनरावृति न हो इनकी गारंटी की जाए।

पटना में नाला रोड की घटना के खिलाफ छात्र संगठनों का संयुक्त धरना

पटना, 23 अगस्त: नाला रोड की 12 अगस्त की घटना–जिसमें पुलिस ने लंगरटोली गली में भीषण गंदगी एवं जलजमाव की समस्या के खिलाफ आंदोलन कर रहे महिलाओं, छात्रों व आम नागरिकों पर बर्बर पुलिस दमन हुआ, पुलिस द्वारा महिलाओं के साथ बदसलूकी हुई, पुलिस हिरासत में गिरफ्तार महिलाओं एवं छात्र नेताओं की पिटाई की गयी–के खिलाफ दोषी पुलिस अधिकारी को बर्खास्त करने एवं गिरफ्तार छात्र नेताओं की रिहाई की मांग को लेकर छात्र संगठन ऑल इंडिया डेमोक्रेटिक स्टुडेंट्स ऑर्गेनाइजेशन (AIDSO), स्टुडेंट्स फेडरेशन ऑफ इंडिया (SFI), ऑल इंडिया स्टुडेंट्स फेडरेशन (AISF), ऑल इंडिया स्टुडेंट्स एसोसिएशन (AISA) तथा डेमोक्रेटिक स्टुडेंट्स यूनियन (DSU) ने संयुक्त रूप से धरना दिया। धरना की अध्यक्षता AIDSO की अनामिका, SFI के मनोज कुमार चंद्रवंशी, AISF के नवनीत कुमार, AISA के लैस राही तथा DSU के विकास ने की।

छात्र नेताओं ने उक्त घटना की पुरजोर निन्दा करते हुए कहा कि सरकार के सुशासन दावे की पोल इस वीभत्स कांड ने खोल दी है। जिस तरह से महिलाओं पर एवं थाना में पुलिसिया कार्रवाई हुई है, लगता है बिहार में पुन: जंगलराज आ गया है, जहां लोकतांत्रिक आंदोलनों को कतई बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

धरने को AIDSO के राज्य उपाध्यक्ष उमा शंकर वर्मा, अनिल कुमार चांद, AISF के राज्य सचिव विश्वजीत कुमार, धर्मेन्द्र कुमार, महेश कुमार, AISA के मार्कण्डेय पाठक, अशरफ, SFI के मनोज कुमार चंद्रवंशी, राहुल कुमार द्विवेदी, सतीश सिंह तथा DSU के विकास कुमार ने संबोधित किया। इनके अलावा महेश, राकेश, पुष्पा, दीपक कुमार आदि उपस्थित थे।

R.N.I. No.- 43022/85
P.R.No.-DL(C)-12/1123/2009-2011
Posting at IPMBC on 7–8 and 22–23 of Every Month

सरकार द्वारा अन्ना हजारे की माँगे माने जाने को एसयूसीआई(सी) ने जन आन्दोलन की जीत बताया

एसयूसीआई(सी) के महासचिव कॉमरेड प्रभाष घोष ने गत 28 अगस्त को निम्नलिखित प्रैस बयान जारी किया:

वरिष्ठ गांधीवादी सामाजिक कार्यकर्ता श्री अन्ना हजारे द्वारा किये गये अनिश्चितकालीन अनशन को केन्द्र करके देश में भ्रष्टाचार के खिलाफ जन आक्रोश व घृणा का जोरदार विस्फोट देखने को मिला है। जो एक देशव्यापी जनवादी आन्दोलन में तब्दील हो गया जिसने अन्ततः केन्द्र की जन-विरोधी कांग्रेस सरकार को उसकी अनिच्छा के बावजूद संसद में प्रस्तावित लोकपाल बिल लाने के सम्बन्ध में श्री अन्ना हजारे द्वारा उठायी गई लगभग सभी माँगों को मानने के लिए मजबूर कर दिया। यह निस्सन्देह जनवादी आन्दोलन की एक महत्वपूर्ण जीत है और माँगें हासिल करने में यह जन आन्दोलन की जबरदस्त शक्ति को भी दर्शाती है। लेकिन यह सुस्पष्ट समझ लेना है कि जो भी कानून पास किया जाये, अपेक्षित रूप में इसको अमल में लाना केवल तभी सुनिश्चित किया जा सकता है जब संगठित जागरूक दीर्घकालिक जनवादी आन्दोलन का दबाव लगातार बना रहे जिसके बिना यह कानून महज रद्दी कागज का टुकड़ा बनकर रह जाएगा जैसा कि कई पूर्ववर्ती सुलिखित कानूनों का हाल हुआ। इस सन्दर्भ में, हम एक बार फिर सभी का ध्यान इस अहम सच्चाई की ओर दिलाना चाहते हैं कि इस शोषणमूलक पूंजीवादी व्यवस्था को उखाड़ फेंके बिना भ्रष्टाचार को दूर नहीं किया जा सकता जो व्यवस्था जीवन के हर क्षेत्र में भ्रष्टाचार को पनपा रही है।

अन्ना हजारे की गिरफ्तारी के खिलाफ ढकवा सुलतानपुर में प्रदर्शन

जाने-माने ट्रेड यूनियन नेता कॉमरेड एम.के.पांधे के निधन पर शोक सन्देश

भारत के ट्रेड यूनियन आन्दोलन के एक जाने-माने नेता, सीआईटीयू के पूर्व महासचिव व अध्यक्ष और वर्तमान उपाध्यक्ष कॉमरेड एम.के.पांधे के निधन पर शोक प्रकट करते हुए एआईयूटीयूसी के महासचिव कॉमरेड शंकर साहा ने 20 अगस्त को सीटू के महासचिव कॉमरेड तपन सेन को भेजे गये शोक सन्देश में कहा:

''एआईयूटीयूसी और भारत की मेहनतकश जनता की ओर से मैं कॉमरेड पांधे की मृत्यु पर आपको और आपके सहकर्मियों के प्रति अपनी संवेदना और शोक प्रकट करता हूँ। उनकी मौत एकताबद्ध मजदूर आन्दोलन के लिए और सीटू के लिए निस्सन्देह एक क्षति है। एकताबद्ध वामपंथी ट्रेड यूनियन आन्दोलन गठित करने के लिए कॉमरेड पांधे की लगातार कोशिशों की बात उनके न रहने पर बार-बार याद आयेगी, खासकर आज जब हमारे देश का ट्रेड यूनियन आन्दोलन समझौते और आत्म समर्पण के दौर में चला जा रहा है।''

20 अगस्त को दिल्ली के रणदिवे भवन में रखे कॉमरेड एम.के.पांधे के शव पर माल्यार्पण कर एआईयूटीयूसी के सर्वभारतीय अध्यक्ष कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती ने श्रद्धांजलि अर्पित की।

ऑल इंडिया डीएसओ के तत्वावधान में तीसरा कटक जिला छात्र सम्मेलन

पास-फेल प्रणाली की समाप्ति, फीस वृद्धि, विकास शुल्क, स्कूल-कालेजों में शिक्षकों की अपर्याप्त संख्या व शिक्षा के व्यापारीकरण आदि ज्वलंत शिक्षण समस्याओं के खिलाफ 27 अगस्त को कटक में तीसरा जिला स्तरीय छात्र सम्मेलन एआईडीएसओ द्वारा आयोजित किया गया। संगठन की अखिल भारतीय कमेटी के खजांची कॉ. नवेन्दु पाल द्वारा ध्वजारोहण के साथ सम्मेलन की शुरूआत हुई। अतिथियों द्वारा शहीद वेदी पर माल्यार्पण के बाद सत्र का उद्घाटन एसयूसीआई(सी) कटक जिला कमेटी के सचिव कॉ. विश्वबासु दास ने किया। सम्मेलन का संचालन तीन सदस्यीय अध्यक्ष मण्डल द्वारा किया गया जिसमें कॉ. गणेश त्रिपाठी, सिद्धार्थ और सस्मिता मोहंती शामिल थे। मुख्य प्रस्ताव के अलावा दो अन्य प्रस्ताव एक भ्रष्टाचार के खिलाफ और दूसरा ब्लॉक ग्रांट टीचरों के आन्दोलन के समर्थन में रखे गए और सर्वसम्मति से पास किए गए। एआईडीएसओ की कटक जिला कमेटी के सचिव कॉमरेड शिवाशिस प्रहराज ने सचिव रिपोर्ट प्रस्तुत की। एआईडीएसओ, उड़ीसा स्टेट काऊंसिल के अध्यक्ष कॉमरेड अशोक मिश्रा और सचिव कॉमरेड ब्रजबंधु ने सम्मेलन को सम्बोधित किया। संगठन की अखिल भारतीय कमेटी के उपाध्यक्ष कॉ. गोविंद राजुलु ने देश की शैक्षणिक समस्याओं के खिलाफ 9 सितम्बर को होने वाली आल उड़ीसा छात्र हड़ताल सफल बनाने के लिए नवनिर्वाचित कटक जिला कमेटी ने सम्मेलन में आए छात्रों से आह्वान किया। सम्मेलन का समापन सर्वहारा के महान नेता, इस युग के अग्रणी मार्क्सवादी चिन्तनकार कॉमरेड शिवदास घोष पर रचित गीत से हुआ।

कॉमरेड सुखवीर सिंह 'भगतजी' नहीं रहे!

सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया (कम्युनिस्ट) के जे.पी. नगर जिला कमेटी सदस्य कॉमरेड सुखवीर सिंह 'भगतजी' का 14 अगस्त सायं 6 बजे निधन हो गया। वह एक सप्ताह पहले लगभग स्वस्थ थे। हाल में उन्हें नजला व कफ की शिकायत हुई तथा हालत बिगड़ती गयी। जिला कमेटी जे.पी. नगर के कई सदस्य उनके पास रहे और 14 अगस्त 2011 सायं 6 बजे उन्होंने अंतिम सांस ली।

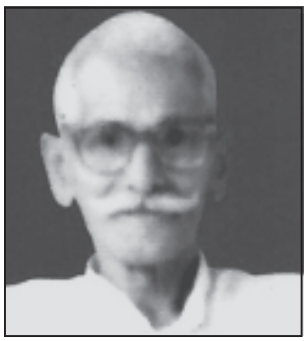

भगतजी लगभग 87 वर्ष के थे। उनके पीछे उनकी पत्नी, पुत्र (इकलौता) व उसका भरा पूरा परिवार है तथा ये सभी लोग पार्टी के हमदर्द व समर्थक हैं। जिला मुरादाबाद जिसमें से बाद में जिला जे.पी. नगर बना, में एस.यू.सी.आई.(सी) की जिला कमेटी की स्थापना कॉ. भगतजी के गाँव भवालपुर की मडैया से ही हुई थी। भगतजी जब से पार्टी से जुड़े, फिर पीछे मुड़कर नहीं देखा और अन्तिम सांस तक पार्टी के वफादार सिपाही बन कर जीये। उन्होंने छोटी से लेकर बड़ी तक कोई पार्टी मीटिंग ऐसी नहीं छोड़ी जिसमें वे उपस्थित न रहे हों। वह प्रथम पार्टी कांग्रेस में कलकत्ता गये थे। पटना, कानपुर, लखनऊ, दिल्ली सभी जगहों पर पार्टी प्रोग्रामों में गये थे। दिल्ली से हुसैनीवाला तक पहली साइकिल रैली में वह जिद करके शामिल रहे उस समय लगभग 55 वर्ष के थे। हाथ में डंडा व कंधे पर बैग जिसमें बिक्री वास्ते पार्टी साहित्य इस छवि में लोग उन्हें खूब पहचानने लगे थे। उनका नाम जाने बिना केवल ''भगतजी'' से लोग उन्हें जानते थे। हमेशा पार्टी मीटिंगों में कार्य को तेज करने की प्रेरणा देते रहे। अन्तिम सांस तक सक्रियता का सबसे बड़ा सबूत है कि जून 2011 तक का मन्थली फंड उनका जमा है तथा सर्वहारा दृष्टिकोण का वर्ष 26 अंक 13 पढ़कर वे चले गये हैं।

21 अगस्त रविवार को उनके घर पर जिला कमेटी सदस्यों तथा उनके परिवार की राय से 'शोक सभा' का आयोजन किया गया। शव को गंगा ले जाना, तेरहवीं करना, गऊ दान करना, पंड़ित भोग करना, महिलाओं के जत्थे (सापा) आना रोना आदि अंधविश्वासपूर्ण रीति-रिवाज को तिलांजिली देते हुये केवल शोक सभा में श्रद्धांजली देने का प्रोग्राम तय किया गया।

सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया की ओर से कॉ. गिरिजेश्वर सिंह द्वारा 3ए/38, डब्ल्यू.ई.ए., करोल बाग, नई दिल्ली-5 से संपादित व प्रकाशित तथा परम्परा प्रिंटिंग प्रेस, बी-70/83, इण्डस्ट्रियल एरिया, लॉरेंस रोड, दिल्ली-35 से मुद्रित, दूरभाष: 011-25726631, E-mail: sarvaharadrishtikon@yahoo.com